अनुराग
बाल पत्रिका

त्रैमासिक

संयुक्तांक

अक्टूबर 04-मार्च 05

दस रुपये

अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर-जनवरी-फरवरी-मार्च की कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

२२ अक्टूबर (१६००)

शहीदे आज़म भगतसिंह के साथी व काकोरी काण्ड के शहीद अशफ़ाकउल्ला का जन्मदिवस।

२६ अक्टूबर

अन्याय और ज़ुल्म के ख़िलाफ़ संघर्षरत, भारतीय आज़ादी के प्रेणता तथा वाणी और कलम के सिपाही, गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्मदिवस।

२७ अक्टूबर

शहीद क्रान्तिकारी यतीन्द्र नाथ दास का जन्मदिवस।

७ नवम्बर (१६१७)

अक्टूबर क्रान्ति (रूसी क्रान्ति) दिवस। मानवता की मुक्ति का वह महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दिवस जब आम जनता के अपने राज्य की स्थापना हुई थी। महान क्रान्तिकारी ब्लादीमिर इल्लीच लेनिन के नेतृत्व में रूसी क्रान्ति सम्पन्न हुई थी और सोवियत संघ की स्थापना हुई थी।

१३ नवम्बर

जनपक्षधर लेखक एवं कवि माधव मुक्तिबोध का जन्मदिवस।

२८ नवम्बर (मित्रता दिवस)

फ्रेडरिक एंगेल्स का जन्मदिवस। जनता के मुक्तिकामी दर्शन के प्रणेता, जर्मनी के राइन प्रांत में जन्मे और कार्ल मार्क्स के अनन्य मित्र एवं सहयोगी। इनका जन्म दिवस पूरी दुनिया में मित्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

१७ दिसम्बर (१६२७)

काकोरी काण्ड के शहीद राजेन्द्र लाहिड़ी का शहादत दिवस।

१६ दिसम्बर (१६२७)

काकोरी काण्ड शहादत दिवस। आज़ादी के इतिहास का वह काला दिन जब काकोरी काण्ड के तीन वीर सपूतों पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला एवं रोशन सिंह को फाँसी दी गयी थी।

२१ दिसम्बर

लेनिन के सहयोगी और सोवियत संघ के प्रमुख नेता जोसेफ स्तालिन का जन्मदिवस।

२६ दिसम्बर

मानवता की मुक्ति के प्रतीक पुरुष एवं चीनी क्रान्ति के जनक माओ त्से-तुङ का जन्मदिवस।

२३ जनवरी

'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा' का नारा देने वाले क्रान्तिकारी सुभाष चन्द्र बोस का जन्मदिवस।

१ फरवरी (बसंत पंचमी)

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की जयन्ती।

५ फरवरी (१६२२)

चौरी-चौरा काण्ड, जिसमें अंग्रेजों के ज़ुल्म के खिलाफ जनता के बहादुर सपूतों ने बगावत की आवाज उठाते हुए स्थानीय थाने में आग लगा दी थी।

१० फरवरी

महान कवि व नाटककार बर्टोल्ट ब्रेष्ट की जन्मदिवस।

१८ फरवरी (१६४६)

भारतीय नौसेना के बहादुर नौजवानों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया था जिसे हम नौसेना विद्रोह के नाम से जानते हैं।

१६ फरवरी (१६७३)

महान क्रान्तिकारी वैज्ञानिक कॉपर्निकस का जन्मदिवस। इसे विज्ञान दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

२७ फरवरी

महान क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद का जन्मदिवस।

८ मार्च

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस।

२३ मार्च

शहीद दिवस (१६३१)। शहीदे आज़म भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव ने देश की आज़ादी की खातिर आज के दिन ही हँसते-हँसते फाँसी का फंदा चूम लिया था।

–आज ही के दिन पंजाब के क्रान्तिकारी कवि अवतार सिंह 'पाश' को खलिस्तानी आतंकवादियों ने मार दिया था।

२५ मार्च

क्रान्तिकारी पत्रकार, कलम के सिपाही गणेश शंकर विद्यार्थी आज ही के दिन साम्प्रदायिक दंगों को रोकने की कोशिश में शहीद हो गये थे।

२८ मार्च

विश्व प्रसिद्ध महान क्रान्तिकारी लेखक मक्सिम गोर्की का जन्मदिवस (१८६८)।

–भारत के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष (१८५७) के नायक मंगल पाण्डे ने आज ही के दिन विद्रोह का बिगुल फूंका था।

अनुराग
बाल पत्रिका

त्रैमासिक, वर्ष 9, अंक 4/वर्ष 10, अंक 1
संयुक्तांक, अक्टूबर 2004-मार्च 2005

सम्पादक
कमला पाण्डेय

सह सम्पादक
अभिनव सिन्हा

सज्जा
रामबाबू

स्वत्वाधिकारी कमला पाण्डेय के लिए यशकरण लाल द्वारा डी-68, निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित तथा मुद्रक बाबूराव बोरकर द्वारा शान्ति प्रेस, नयागाँव (पश्चिम), लखनऊ से मुद्रित।

सम्पादकीय कार्यालय
डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020
फोन : (0522) 2786782

इस अंक का मूल्य : 10 रुपए
वार्षिक सदस्यता : 48 रुपए
(डाक व्यय सहित)

इस अंक में

सम्पादकीय

संवाद

प्यारे बच्चो,

पिछले २६ दिसम्बर को जब तुम सब बड़े दिन का त्योहार क्रिसमस मना रहे थे। खुशियों की धूमधाम में शामिल थे, तभी दक्षिण एशिया के समुद्र तल (हिन्द महासागर) में भयानक भूकम्प आया। पचासों फीट ऊँची-ऊँची लहरें घोर गर्जन करती हुई अबाध गति से दौड़ पड़ीं। पलक झपकते गाँव के गाँव, शहर के शहर, समुद्री तट बन्ध, भूमि के बड़े-बड़े हिस्से, टापू के टापू समुद्र की अतल गहराई में समा गए। सुनामी की भीषण तबाही–लाखों स्त्री, पुरुष, बच्चे और पशु काल के गाल में समा गए। प्रकृति के इस प्रकोप ने पृथ्वी की गति को भी प्रभावित किया। बची तो आश्चर्य जनक तरीके से २५० लोगों की एक आदिवासी जाति जो दूर-दूर तक फैले हुए एक विशालकाय वृक्षों वाले जंगल की गोद में रहती थी। उनका एक भी आदमी नहीं मारा गया, ये चौकन्ने तीर कमान से लैस–इन्होंने किसी भी प्रकार की राहत या दान की ओर देखा तक नहीं।

तुम लोगों ने भी इन खबरों को टी.वी. पर देखा होगा। अखबारों में पढ़ा होगा। रेडियो पर या लोगों को बात करते सुना होगा कि दसियों हजार (नन्हे) बच्चे (अनाथ) बेपनाह हो गए।

इस तबाही से उबरने और सहायता पहुँचाने के लिए सरकारी स्तर से लेकर आम नागरिकों तक ने राहत पहुँचाने की कोशिश की है। कुछ संगठनों ने शोक प्रस्ताव पास कर अपना फर्ज निभा दिया। कुछ ने प्रार्थनाएँ या दुआएँ पढ़ीं। लेकिन कुछ लोगों ने व्यवस्था पर उँगली उठाते हुए शंका भी प्रकट की है कि क्या मानवता के नाते संवेदना से भरकर जो सहायता राशि दी जा रही है, वह ठीक तरह से ठीक लोगों तक पहुँच पायेगी?

बच्चो, सोचने की जरुरत यह है कि क्या दान दाता का नाम पा लेने भर से आपदाग्रस्त लोगों की समस्याएँ हल हो जाएँगी? या कि प्रार्थना मात्र से असहाय बच्चे भूख, बीमारी और बदहाली से बच पाएँगे?

हमें जानना होगा कि इन प्राकृतिक आपदाओं का मूल कारण क्या है? इनसे निजात कैसे पाएँ? विज्ञान के इस युग में जब सूचना तन्त्र इतना आगे बढ़ चुका है, तो जिन साम्राज्यवादी देशों को इस जानलेवा सुनामी लहर की जानकारी, उन्हें अपने यन्त्रों के माध्यम से कई घण्टे पहले ही हो गई थी उन्होंने इन्डोनेशिया, श्रीलंका, मलयेशिया, बर्मा, मालदीव, फिलीपींस, थाईलैण्ड और भारत के अण्डमान निकोबार, तमिलनाडु, आन्ध्र और केरल आदि प्रदेशों के लोगों को सर्वनाश से बचने की सूचना (पहले) क्यों नहीं दी?

हमारे देश को भी आज़ाद हुए सत्तावन साल हो गये हैं और हम बाढ़, सूखा, भूकम्प, भूस्खलन जैसी त्रासदियों से बचने का आज तक निराकरण क्यों नहीं कर पाये?

क्या कमी है हमारी वर्तमान व्यवस्था में?
आशा है जो सोचोगे–हमें भी लिखोगे।

–शुभकामनाओं और प्यार के साथ

तुम्हारी नानी
कमला पाण्डेय

पोस्ट बाक्स

आदरणीया महोदया,

सादर नमन,

आपकी त्रैमासिक बाल पत्रिका– 'अनुराग' का अप्रैल-जून'०४ अंक प्रथम बार देखने का अवसर मिला, तदर्थ प्रसन्नता हुई। बाल पत्रिकाओं की बाढ़ में आपकी पत्रिका ने अपनी अमिट पहचान बना ली है, इसमें कोई सन्देह नहीं। इस अंक की सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक हैं जो देश के होनहार बच्चों का ही नहीं, अपितु युवावर्ग का भी पथ प्रदर्शन करती हैं। कहानियों के कथानक और कविताओं के भाव के अनुरूप रेखाचित्रों के संयोजन से पत्रिका की गुणवत्ता अप्रतिम है। प्रेरक सम्पादकीय एवं बालमनोविज्ञान को दृष्टिपथ में रखकर सृजित रचनायें पत्रिका के गौरववर्द्धन में अहम भूमिका रखती हैं। पत्रिका के प्रति आपका समर्पण व सत्प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय है। ईश्वर आपको व आपके प्रिय 'अनुराग' को सुदीर्घ जीवन प्रदान करे।

डॉ. त्रिलोकी सिंह
करछना, इलाहाबाद

उल्टा दरख्त

कृश्नचंदर

(इस बार से हम प्रसिद्ध कहानीकार कृश्नचंदर की लंबी कहानी 'उलटा दरख्त' का धारावाहिक प्रकाशन शुरू कर रहे हैं। ये ऐसी दिलचस्प कहानी है जिसे बच्चों से लेकर बड़े तक खूब मजे से पढ़ सकते हैं। पढ़कर बताना, तुम्हें कैसी लगी।)

जब यूसुफ का बाप मरा तो यूसुफ के पास एक झोंपड़ा, एक गाय, एक कुआँ और एक बगीचा बाकी रह गया था। बाकी सब कुछ जो था वह यूसुफ का बाप अपनी जिंदगी ही में कर्ज की भेंट चढ़ा चुका था। कुछ गाँव के खोजे को, कुछ बादशाह को।

बाप के मरने के बाद यूसुफ की माँ ने यूसुफ से कहा, "अब हमारे पास कुछ नहीं रहा। अब तू सीधा बादशाह के पास चला जा और उसकी फौज में भर्ती हो जा।"

यूसुफ बड़ा बेवकूफ और मुँहफट था। वह सिर्फ बारह बरस का था और बात करने की उसे तमीज नहीं

थी। इसलिए उसने माँ की बात न मानी। उलटा कहने लगा, "वाह, मैं क्यों बादशाह के पास जाऊँ? बादशाह खुद क्यों न मेरे पास आए? फौज की जरूरत उसे है, मुझे तो नहीं।"

माँ ने घबरा कर इधर-उधर देखा, बोली, "शश्श.. .आहिस्ता बात कर। बादशाह सुन लेगा तो जान से मार देगा।"

ऐसा ही हुआ। यह बात बादशाह के कानों तक पहुँच गई, क्योंकि जो बादशाह जुल्म करता है वह मुल्क में मुखबिर भी लगाए रखता है। ज्योंही उसे मालूम हुआ कि यूसुफ ने क्या कहा, वह खुद यूसुफ के पास पहुँच गया। यूसुफ ने पहले अपने बादशाह को कभी नहीं देखा था। इसलिए उसने पूछा, "तुम कौन हो?"

बादशाह ने कहा, "मैं बब्ब..बब..बादशाह सस्स.. सस..सलामत हूँ।"

यूसुफ ने हँसते हुए कहा, "अरे तुम तो हकले हो? क्या सब बादशाह हकले होते हैं?"

बादशाह को बहुत गुस्सा आया। मगर उस वक्त उसे फौजियों की जरूरत थी। इसलिए गुस्से को पी गया। बोला, "नहीं कक्क..कक..कुछ हकले होते हैं, कुछ गग्ग..गग..गँजे होते हैं। कुछ बब्ब..बब..बहरे होते हैं। हर एक को कोक्क. .को..कोई न कोई बीमारी जरूर होती है।"

"तुम्हें क्या बीमारी है," यूसुफ ने पूछा।

"मुझे जुल्म करने की बीमारी है," बादशाह ने हकलाते हुए कहा।

मगर मैं कहाँ तक उसके हकलेपन को बयान कर सकता हूँ। बादशाह का हकलापन बयान करते-करते मेरा कलम खुद न हकला हो जाए, इसलिए अब सीधे-सीधे लिखता हूँ। तुम जहाँ कहीं भी बादशाह की बातचीत आए, उसे खुद हकला के पढ़ो, बड़ा मजा आएगा।

यूसुफ ने कहा, "तो क्या मुझ पर भी जुल्म ढाने आए हो?"

बादशाह ने कहा, "नहीं, नहीं। अपनी फौज में भर्ती करने आया हूँ।"

"तनखाह क्या दोगे?"

बादशाह ने कहा, "मैं अपने फौजियों को तनखाह नहीं देता, लूट में से चौथा हिस्सा देता हूँ।"

"लूट कैसी?"

"मेरे फ़ौजी दूसरे मुल्कों में जाते हैं। लूट-मार करते हैं और जो माल लाते हैं, उसमें से चौथा हिस्सा उनको देता हूँ। मगर तुमको दसवाँ हिस्सा दूँगा क्योंकि तुम अभी छोटे हो। बारह बरस के हो। ज्यादा लूट-मार नहीं कर सकोगे। जल्दी बोलो। तुम्हें मेरी नौकरी मंजूर है? मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है।"

यूसुफ ने सोच कर पूछा, "दूसरे मुल्कों में भी आदमी रहते हैं ना?"

"हाँ, बिल्कुल तुम्हारी तरह के आदमी होते हैं।"

यूसुफ ने कहा, "तो फिर मैं तुम्हारी नौकरी नहीं कर सकता।"

बादशाह ने अकड़ कर कहा, "जानते हो, तुम बादशाह सलामत से बात कर रहे हो!"

यूसुफ ने भी अकड़ कर कहा, "जानते हो, तुम एक मोची के बेटे से बात कर रहे हो!"

बादशाह मुस्करा दिया। उसने समझ लिया लड़का बेवकूफ है। अब उसने दूसरा रास्ता अख्तियार किया। उसने झोंपड़े के इर्द-गिर्द निगाह डाली। खूबसूरत बगीचे में खिले हसीन फूलों की तरफ देखा और बोला, "तुम्हारे बगीचे के फूल बहुत खूबसूरत हैं।"

यूसुफ इस तारीफ से खुश हुआ। बोला, "जितने फूल चाहिए, ले जाओ।"

बादशाह ने कहा, "जिस जमीन से ये फूल खिलते हैं, वह खुद कितनी खूबसूरत होगी। मैं इस जमीन को क्यों न ले लूँ।"

यह कह कर बादशाह ने ताली बजाई। पचास फौजी हाजिर हो गए और उन्होंने यूसुफ का बगीचा जब्त कर लिया, बहुक्म सरकार!

दूसरे दिन माँ ने यूसुफ से कहा, "अब तो बगीचा भी हाथ से गया। अब तू बादशाह की पलटन में भर्ती हो जा।"

यूसुफ ने कहा, "माँ, अगर मैं भर्ती हो गया तो मुझे जुल्म करने की बीमारी हो जाएगी। माँ, क्या तू चाहती है कि तेरा बेटा बीमार हो जाए?"
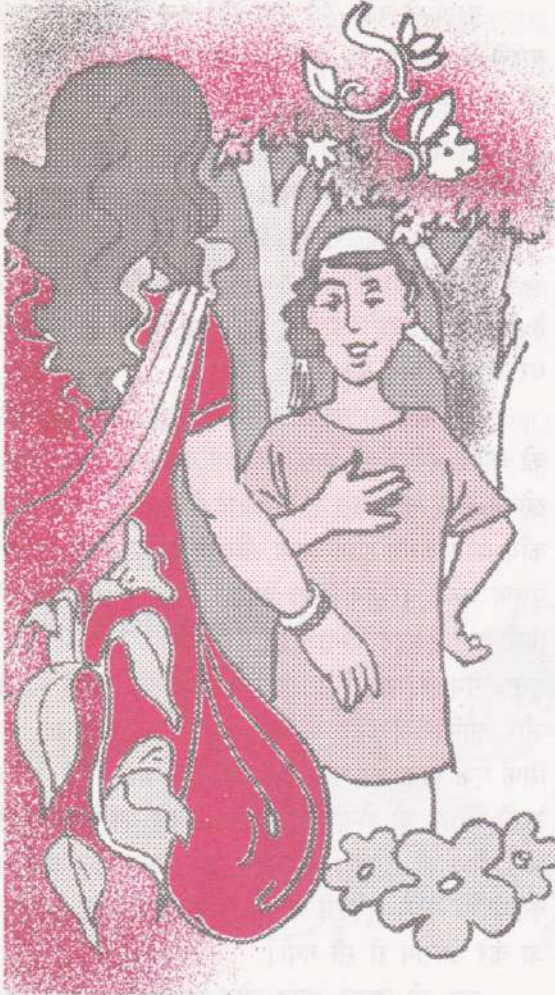
माँ ने कानों पर हाथ धर कर कहा, "तौबा...तौबा! बेटा, मैं तो दिन-रात तेरी सेहत की दुआएँ माँगती हूँ।" इतना कह कर माँ झोंपड़े के अंदर चली गई। यूसुफ कुएँ से डोल खींच कर अपनी गाय को पानी पिलाने लगा। इतने में उसे अपने बगीचे में, जो अब बादशाह का हो चुका था, खूबसूरत कपड़े पहने एक लड़की नजर आई।

यूसुफ ने पूछा, "तुम कौन हो?"

लड़की ने कहा, "मैं बादशाह जादी हूँ। मैं अपने नए बगीचे की सैर के लिए निकली हूँ। मुझे झुक कर सलाम करो।"

"क्यों सलाम करूँ?" यूसुफ ने पूछा।

शहजादी ने अकड़ कर कहा, "मैं शहजादी हूँ।"

यूसुफ ने अकड़ कर कहा, "मैं मोची का बेटा हूँ।"

शहजादी ने कहा, "मेरे कपड़े सोने के तारों के बने हैं।"

यूसुफ ने कहा, "मेरे दाँत बहुत मजबूत हैं।"

शहजादी ने कहा, "मैं हर रोज गाजर का हलवा खाती हूँ।"

यूसुफ बोला, "मैं गाजर उगाता हूँ। क्या तुम गाजर उगा सकती हो?"

शहजादी बोली, "नहीं।"

यूसुफ तल्खी से कहने लगा, "तुम सिर्फ हलवा खा सकती हो। खैर कहो, क्या काम है? क्यों आई हो?"

शहजादी बोली, "मुझे प्यास लगी है।"

यूसुफ ने कुएँ से डोल खींचा और शहजादी को पानी पिलाया। शहजादी ने पानी पी कर कहा, "तुम्हारे कुएँ का पानी तो बहुत मीठा है। ऐसा पानी तो मैंने जिन्दगी में कभी नहीं पिया।"

यूसुफ ने खुश हो कर कहा, "रोज यहाँ आ जाया करो तो मैं तुम्हें रोज इसी कुएँ का पानी पिला दिया करूँगा।"

"अगर यह पानी मीठा है तो यह कुआँ कितना मीठा होगा जिससे यह पानी निकलता है। मैं इस कुएँ को ही क्यों न ले लूँ!"

शहजादी ने ताली बजाई। पचास फौजी हाजिर हो गए और उन्होंने कुएँ को जब्त कर लिया। बहुक्म सरकार!

तीसरे दिन माँ ने फिर यूसुफ से कहा, "बेटा! अब तो फौज में भर्ती हो जाओ, वरना हम भूखे मर जाएंगे।"

यूसुफ ने कहा, "माँ, अभी यह गाय बाकी है। मैं गाँव के खोजे के पास बेच कर आता हूँ। जो रकम मिलेगी, उससे कुछ दिन रोटी खा लेंगे। फिर देखेंगे क्या होता है?"

माँ रोने लगी। गाय उसे बहुत प्यारी थी। मगर भूख का क्या इलाज! यूसुफ गाय को खोल कर गाँव के खोजे के पास ले गया। खोजे ने पूछा, "गाय कितना दूध देती है?"

"तीन सेर देती है। अच्छा दूध होता है। पी कर देख लो।"

"पी चुका हूँ। जब तुम्हारा बाप जिन्दा था, तब की बात है। गाय बहुत अच्छी है, मगर दूध कम देती है। तीन सेर दूध देती है, इसलिए इस गाय के तुम्हें तीन रुपये मिलेंगे।"

"सिर्फ तीन रुपये?" यूसुफ ने हैरान होके पूछा।

"हाँ", खोजे ने कहा, "एक सेर दूध का दाम एक रुपया होता है। इस हिसाब से तीन सेर के तीन रुपये हुए। अगर तुम्हारी गाय चालीस सेर दूध देती तो तुमको चालीस रुपये मिलते। मगर मैं क्या करूँ, तुम्हारी गाय सिर्फ तीन ही सेर दूध देती है? ये तीन रुपये ले जाओ। हिसाब बिल्कुल ठीक है।"

यूसुफ बेचारे को हिसाब कहाँ आता था। बोला, "चाचा! इससे तो मेरे घर का काम नहीं चलेगा।"

खोजे ने कहा, "तो ये तीन दाने ले जाओ।"

"ये तीन दाने कैसे हैं?"

"जादू के हैं। एक जादूगर को मेरा कर्ज देना था, वह दे गया था...इन तीन दानों को जो जमीन में बोएगा, उसकी जमीन में दूसरे ही दिन एक जादू का पेड़ निकलेगा जो आसमान तक पहुँच जाएगा। फिर तुम उस दरख्त पर चढ़ कर आसमान तक जा सकते हो। मगर शर्त यह है कि इन तीनों जादू के दानों को इकट्ठा बो दो।"

यूसुफ हैरत से खोजे की बात सुनता रहा। आखिर में खोजे ने कहा, "तो बोलो क्या लेते हो? ये तीन रुपये या ये तीन दाने?"

यूसुफ ने जल्दी से तीन दानों को अपनी मुट्ठी में दबाया और अपने घर की तरफ भागा। खोजा भागते हुए यूसुफ को देख कर मुस्कराया। बोला, "खूब उल्लू बनाया, गधे को!"

यूसुफ भागते हुए घर पहुँचा तो माँ ने कहा, "रुपये लाए?"

यूसुफ ने कहा, "मैं तो जादू के दाने लाया हूँ।"

माँ ने माथा पीट लिया, बोली, "सारी उम्र बच्चे ही रहोगे या कभी अक्ल की बात भी करोगे? अरे, इन तीन दानों का क्या होगा? रुपये लाए होते तो कुछ दो-चार रोज रोटी तो खाते। कैसा बेवकूफ है, मेरा बेटा!"

यूसुफ ने कहा, "ये तीन दाने जादू के हैं। इन्हें बाहर बगीचे में बोऊँगा, तो उनमें से जादू का एक पेड़ निकलेगा जो आसमान तक जाएगा। फिर उस पेड़ पर चढ़ कर आसमान तक जाऊँगा।"

माँ ने कहा, "आसमान पर जा कर क्या करोगे?"

बेटे ने कहा, "तुम्हारे लिए तारे तोड़ कर लाऊँगा।"

माँ ने सिर हिला कर कहा, "कैसे-कैसे सपने देखता है मेरा बेटा! इसको खोजे ने ठग लिया। जाती हूँ पड़ोसी के घर से कुछ माँग कर लाती हूँ।"

जब माँ चली गई तो यूसुफ ने मुट्ठी खोली और दानों को बाहर बगीचे की घास पर रख कर एक जगह जमीन खोदने लगा ताकि उन दानों को बो दे। इतने में एक कौआ काँय-काँय करता हुआ आया और दो दाने उठा के ले गया। यूसुफ बहुत परेशान हुआ क्योंकि खोजे ने कहा था कि तीनों दाने इकट्ठे बोना वरना जादू का असर नहीं होगा। यूसुफ गम के मारे रोने लगा। गाय भी गई, रुपये भी गए और आखिर में जादू के दाने भी गए। अब उसके पास सिर्फ एक दाना रह गया था। अब वह क्या करे? आखिर उसने सोचा, जो होगा देखा जाएगा। जादू का पेड़ न सही, कोई पौधा तो उगेगा। यह सोच कर उसने उस दाने को बगीचे की नरम भुरभुरी जमीन में बो दिया और झोंपड़े में जा कर आराम से सो गया।

रात को बादल बहुत जोर से गरजा और बिजली लहरा-लहरा कर कौंधती रही। बारिश, तूफान और हवा के झक्कड़ ने रात भर यूसुफ को सोने न दिया। रात को कई बार उठ कर बिजली की रोशनी में बगीचे की तरफ देखा, मगर उसे कहीं जादू का पेड़ नजर न आया। जब सुबह हुई और तूफान थमा तो यूसुफ भाग कर बगीचे में गया। तूफान ने बहुत से पौधे उखाड़ मारे थे। बहुत से पेड़ गिर गए थे और जहाँ उसने जादू का दाना बोया था, वहाँ बिजली गिरने से जमीन फट गई थी और जमीन में एक गहरा गड्ढा नजर आ रहा था। मगर जादू का दरख्त जो आसमान की तरफ ऊँचा जाता था, वहाँ कहीं नहीं था। यूसुफ बहुत मायूस

हुआ। उसकी माँ भी रोने लगी। इतने में यूसुफ ने जो गौर से जमीन के अंदर गड्ढे की तरफ देखा तो नजर आया कि उसके अंदर एक बहुत बड़ा पेड़ उगा है, मगर उलटा उगा है। यानी यह दरख्त ऊपर आसमान की तरफ जाने की बजाय नीचे जमीन के अंदर ही अंदर, जहाँ तक यूसुफ की नजर गई, चला गया था। कई मील नीचे जाकर यह दरख्त अन्धेरे में गुम हो जाता था।

माँ ने हाथ मलते हुए कहा, "अफ़सोस, यह दरख्त उलटा उग आया है। जाना था ऊपर आसमान को, चला गया नीचे जमीन के अंदर! यह सब उस खोजे की कारस्तानी है।"

यूसुफ जमीन की शिगाफ (दरार) में उतर गया। उसने दरख्त के तने के गिर्द अपनी बाँहें लपेट ली और माँ से कहने लगा, "उलटा उगा है या सीधा! मैं तो अब इस दरख्त पर चढ़ के देखता हूँ कि यह कहाँ जाता है?"

माँ मिन्नत करते हुए बोली, "अरे बेटा! जमीन के अंदर मत जाओ। अंदर बहुत अन्धेरा है। जाने क्या है, क्या नहीं है! मुझे तो आगे अन्धेरा ही अन्धेरा नजर आता है।"

मगर यूसुफ ने माँ की एक बात न सुनी। वह जल्दी से दरख्त के तने पर चढ़ता हुआ जमीन में उतर गया। कुछ दूर तक सूरज की रोशनी उसके साथ रही और वह उसकी मदद से दरख्त की टहनियों पर चढ़ता रहा, मगर आगे जा कर रोशनी का आना बन्द हो गया और वह अन्धेरे में दरख्त की शाखों को टटोल-टटोल कर आगे बढ़ने लगा।

कुछ दूर आगे जाके इतना घटाटोप अन्धेरा छा गया कि उसे बिल्कुल नजर न आया। यहाँ पर उसके कानों में तरह-तरह की आवाजें आने लगी, "मारो, मारो! जाने न पाए। बगावत कर दो, आग लगा दो। लुटेरों को लूट लो।"

यूसुफ बहुत घबरा गया। उसने हाथ से टटोला। उसे दरख्त के पास एक सीढ़ी मिली। यूसुफ ने दरख्त छोड़ दिया और सीढ़ी पर चढ़ने लगा। सीढ़ी पर चढ़ कर वह एक दरवाजे के पास पहुँचा। दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाजा खुल गया और उसने देखा कि वह एक बहुत बड़े गुंबद के नीचे खड़ा है। चारों तरफ लोहे की सलाखें हैं और एक ताकचे में मोमबत्ती जल रही है। गुंबद में कोई नहीं है। फिर भी ऐसा मालूम होता है जैसे हजारों आवाजें एक-दूसरे से लड़ रही हैं!

"कौन है?" यूसुफ गुंबद के नीचे खड़ा हो कर चिल्लाया।

"कौन है? कौन है?"

यूसुफ की आवाज गुंबद ही में गूँजी और फिर जवाब में हजारों कहकहे सुनाई दिए। यूसुफ के बदन के रोंगटे खड़े हो गए। मगर वह हिम्मत हारने वाला न था। उसने चिल्ला कर कहा, "जो हँसता है, वह सामने आ जाए।"

जवाब में फिर जोर से कहकहे लगे और नारों की ऊँची-ऊँची आवाजें सुनाई दी जैसे हजारों-लाखों लोग

किसी जुलूस में एक साथ चल रहे हों। अभी ये आवाजें उसके कान में आ ही रही थीं कि उसके बिल्कुल करीब ही से गोया एक आवाज सरगोशी में आई। उस आवाज ने कहा, "जानते हो तुम कहाँ हो?"

"नहीं", यूसुफ ने सिर हिला कर कहा।

"यह आवाजों का कब्रिस्तान है।"

"आवाजों का!"

"हाँ", नन्हीं-मुन्नी सरगोशी करने वाली आवाज ने कहा, "ये सब आवाजें उन आदमियों, शायरों, सियासतदानों की हैं जिनको हमारे बादशाह ने या तो कत्ल करा दिया है या जेल में डाल दिया है क्योंकि वे उसके जुल्म के खिलाफ आवाज उठाते थे।"

"फिर", यूसुफ ने पूछा।

"फिर यह हुआ कि कत्ल करने के बाद भी और जेल में डाल देने के बाद भी उन शायरों और लेखकों और सियासतदानों की आवाज नहीं रुकी और मुल्क में गूँजती रही। इस लिए बादशाह ने हम तमाम आवाजों को भी पकड़ लिया है और इस गुंबद में बन्द कर दिया है। अब उसका ख्याल है कि ये आवाजें हमेशा के लिए दबा दी गई हैं और अब उसको हमसे कोई खतरा नहीं है। हा..हा..हा..हा! बादशाह किस कदर बेवकूफ है!"

यूसुफ ने पूछा, "क्यों?"

"क्योंकि हम तमाम आवाजों ने मिल कर इस गुंबद के अंदर एक सुरंग तैयार की है। तुम जानते हो, यह सुरंग बादशाह के महल तक जाती है। यह गुंबद, यह आवाजों का कब्रिस्तान बिल्कुल बादशाह के महल के नीचे स्थित है। अब हम सब आवाजें मिलकर इस सुरंग में एक पलीते की तरह घुस जाएंगी और तुम्हारा काम यह होगा कि इस मोमबत्ती से इस पलीते को आग लगा दो। क्योंकि हम सिर्फ आवाजें ही हैं, हमारे हाथ नहीं हैं। और जब तक इंसान के हाथ इस काम में नहीं लगेंगे, यह पलीता नहीं जलेगा। तो, अब जल्दी से तुम यह काम कर डालो और फिर भाग कर अपने दरख्त पर चढ़ जाना और वहाँ से तमाशा देखना।"

यूसुफ ने ताकचे से मोमबत्ती उठाकर कर सुरंग में रख दी। गुंबद में लाखों आवाजें गरजने लगीं और बारूद तेजी से सुरंग के अंदर घुसती चली गईं। यूसुफ भाग कर दरवाजे से निकल गया और जल्दी से दरख्त पर चढ़ गया। अभी वह दरख्त की एक टहनी पर चढ़ा ही था कि एक जोर के धमाके की आवाज आई, जैसे आवाजों का गुंबद फट गया हो। और फिर उसने देखा कि दरख्त से दूर, बहुत दूर तक हजारों मोमबत्तियाँ जल रही हैं और बहुत दूर तक उसका रास्ता रोशन हो गया है।

यूसुफ खुशी-खुशी दरख्त के ऊपर चढ़ता गया। तीन दिन और तीन रात दरख्त के ऊपर चढ़ता गया। रास्ते में अगर उसे भूख लगती तो पेड़ से जादू के दाने तोड़ कर खाता जिनका जायका अंगूर की तरह मीठा था। और अंगूर ही की तरह उनमें रस भी था। जादू के थे ना वे, इसी लिए।

खैर तीन दिन और तीन रातें ऊपर चढ़ने के बाद

फिर अन्धेरा छा गया। मोमबत्तियाँ खत्म हो गई। अब भी वह अन्धेरे में ऊपर चढ़ता रहा, मगर अन्धेरा बढ़ता गया। उसने सोचा वह क्या करे, आगे बढ़े या पीछे लौट जाए। अभी वह सोच ही रहा था कि किसी ने झटके से उसे दरख्त से उतार लिया। उसे महसूस हुआ जैसे कोई उसे अपनी मुट्ठी में दबाए हुए हवा में उड़ रहा है। यूसुफ ने उसके पंजे से निकलने की बहुत कोशिश की मगर कामयाब न हुआ। थोड़ी दूर इस तरह हवा में उड़ने के बाद किसी ने उसे एक बहुत बुलंद और बड़े दरवाजे पर उतार दिया। यह दरवाजा इतना बड़ा था कि एक देव भी उसके नीचे से आसानी से निकल सकता था। यूसुफ तो खैर आदमी था, बड़ी आसानी से अंदर चला गया। दरवाजे की मेहराब पर लिखा था- *"काले देव का शहर"*

...

यूसुफ अभी मेहराब पर लिखे हुरूफ (शब्द) पढ़ ही पाया था कि किसी ने उसे अपनी मुट्ठी में फिर उठा लिया और यूसुफ ने देखा एक बहुत बड़ा काला हाथ है, एक बहुत बड़ी काली छाती है, एक बहुत बड़ा काला चेहरा है जिसके अंदर बड़ी-बड़ी रोशन और काली आँखें हैं। आखिर उन बड़े-बड़े काले ओंटों से एक गरजदार आवाज निकली और उसने पूछा, "तू कौन है?"

यूसुफ ने पूछा, "तू कौन है?"

"मैं काला देव हूँ।"

यूसुफ ने कहा, "मैं एक मोची का लड़का हूँ। जमीन से आया हूँ।"

"मगर तेरा रंग कैसा है, न काला है न सफेद?"

यूसुफ ने कहा, "हमारे यहाँ इसे गंदुमी (गेंहुआ) रंग कहते हैं।"

"अफसोस", काले देव ने कहा, "तू मेरे किसी काम का नहीं। मैं तुझे आजाद करता हूँ। जिधर से आया है, उधर चला जा।"

यूसुफ की समझ में कुछ न आया कि देव क्या कह रहा है। मगर वह अपनी जान बच जाने पर बड़ा खुश था। इसलिए जल्दी-जल्दी वहाँ से भागा। रास्ते में यूसूफ ने देखा कि वह एक बहुत बड़े शहर से गुजर रहा है जहाँ के सब अमीर लोग काले हैं और सब गरीब लोग सफेद हैं। काले लोग सफेद लोगों से गुलामों का सा काम लेते हैं और उन्हें बड़ी ही गंदी झोंपड़ियों में रखते हैं। उन्हें हथकड़ियाँ पहनाते हैं, उन्हें चाबुक लगाते हैं। उनसे मजदूरी कराते हैं। सब मेहनत का काम सफेद लोग करते हैं--और काले लोग उनकी मेहनत पर ऐश की जिन्दगी गुजारते हैं। यूसुफ ने चार रातें और चार दिन उस शहर में बसर किए और हर जगह यही मंजर देखा। इसलिए जाने से पहले वह फिर काले देव के पास गया और उससे पूछा, "अमां, काले देव! भला यह क्या माजरा है, हर जगह सफेद लोग गुलाम हैं और काले लोग उनपर हुकूमत करते हैं।"

काला देव हँसा। बोला, "जब मैंने सुना कि तुम्हारी जमीन पर सफेद लोग काले लोगों पर हुकूमत करते हैं तो मुझे बड़ा गुस्सा आया। इसलिए मैंने अपनी हुकूमत में सफेद लोगों को अपना गुलाम बनाया है और काले लोगों को उनपर हुकूमत करने देता हूँ। मैंने तुम्हारी जमीन से पकड़-पकड़ कर सफेद लोग बुलवाए हैं और उनको हथकड़ियों में जकड़ रखा है।"

"यह बहुत बुरी बात है", यूसुफ ने कहा।

"कैसे?" देव ने पूछा।

यूसुफ ने कहा, "एक सफेद आदमी को मेरे सामने लाओ।"

एक सफेद गुलाम यूसुफ के सामने लाया गया।

यूसुफ ने कहा, "इसकी उँगली काटो।"

"हा..हा! हा..हा! बड़ी खुशी से।" देव ने सफेद आदमी की उँगली काट दी। उसमें से लाल-लाल खून बहने लगा।

यूसुफ ने काले देव से कहा, "अब तुम अपनी उँगली काटो।"

काले देव ने अपनी उँगली काटी। उसमें से भी लाल-लाल खून बहने लगा।

यूसुफ ने कहा, "देखो, तुम्हारी रंगत काली है। लेकिन खून लाल है। उसकी रंगत सफेद है, लेकिन खून उसका भी लाल है। चमड़ी की रंगत से कोई फर्क नहीं पड़ता।"

"फिर क्या होना चाहिए?" देव शशो-पंज (उलझन) में पड़ गया।

यूसुफ ने कहा, "होना यह चाहिए कि न काला सफेद पर हुकूमत करे और न सफेद काले पर। दोनों मिल-जुल कर रहें और एक-दूसरे के फायदे में शरीक हों। मेरी अक्ल तो यही कहती है।"

देव ने सिर हिला कर कहा, "तुम्हारी अक्ल ठीक है। आज से मैं अपने सफेद गुलामों को आजाद करता हूँ। आज से मेरे शहर में काले और सफेद सब मिल-जुल कर रहेंगे और इकट्ठे मेहनत करेंगे। तुम भी यहीं रह जाओ। मैं तुम्हें अपने शहर का सरदार बनाऊँगा।"

यूसुफ ने कहा, "नहीं, मुझे तो अभी उस दरख्त पर चढ़ना है जहाँ से तुमने मुझे उतारा था। अब अगर तुम मेरे हाल पर मेहरबानी करना चाहते हो तो मुझे फिर उसी दरख्त पर पहुँचा दो।"

देव ने युसुफ की बहुत मिन्नत-समाजत की, मगर यूसुफ न माना। आखिर काले देव ने उसे अपने हाथ पर उठा लिया और उसे वापस दरख्त की शाख पर रख दिया।

यूसुफ दरख्त पर चढ़ने लगा। अब उसने देखा कि बहुत दूर तक अन्धेरा छट गया है और बहुत दूर तक दरख्त की शाखों पर लाखों जुगनू ऊपर ही ऊपर आसमान के सीने की तरफ चमकते चले गए हैं।

...

उन जुगनुओं की मदद से यूसुफ बहुत दूर तक दरख्त पर चढ़ता चला गया। लेकिन एक जगह आ कर

जुगनुओं की रोशनी खत्म हो गई। और अबके जो अन्धेरा शुरू हुआ तो यूसुफ घबरा ही गया। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह सात दिन और सात रातों से इसी दरख्त पर चढ़ रहा है, लेकिन दरख्त खत्म होने में नहीं आता। यूसुफ घबरा कर दरख्त से वापस लौटने वाला था कि उसे उस घटाटोप अन्धेरे में दो आँखें चमकती हुई नजर आईं। यूसुफ उन आँखों के करीब गया तो देखा कि दरख्त की एक बड़ी सी डाली पर एक अजीब किस्म का जानवर बैठा है जिसका चेहरा उल्लू का सा है, लेकिन बाकी सब जिस्म आदमी का है और उसकी आँखों में से एक खौफनाक चमक निकल रही है।

यूसुफ ने हैरान हो कर उससे पूछा, "तुम आदमी हो कि उल्लू?"

"मैं हिंदुस्तानी फिल्मों का डायरेक्टर हूँ", उस अजीब मखलूक (प्राणी) ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें झपका कर कहा, "मैं दिन को सोता हूँ और रात को जागता हूँ।"

यूसुफ के गाँव में एक दफा चलता-फिरता सिनेमा आया था। इसलिए उसे उस अजीब मखलूक की बात समझने में ज्यादा देर नहीं लगी।

यूसुफ ने कहा, "मगर तुम यहाँ अकेले इस दरख्त पर बैठे क्या कर रहे हो?"

"मैं अकेला नहीं हूँ", फिल्म डायरेक्टर ने जवाब दिया। "जरा इस डाल पर आगे बढ़ कर देखो। मेरे दूसरे भाई-बन्द भी जादू के जोर से उल्लू बने हुए यहीं बैठे हैं---घुप्प अन्धेरे में।"

और वाकई जब यूसुफ आगे बढ़ा तो उसे डाल पर सैकड़ों उल्लू नुमा जानवर नजर आए जो चुपचाप डाल पर टाँगे लटकाए और सिर झुकाए ऊँघ रहे थे।

यूसफ को उन बेचारों पर बड़ा रहम आया और बोला, "तुम्हारी ऐसी हालत किसने कर दी है?"

वही पहला फिल्म डायरेक्टर बोला, "दस साल के एक बच्चे के जादू के जोर से। वह बच्चा कहता था कि हम लोगों ने पिछले पच्चीस बरस में एक भी ऐसी फिल्म नहीं बनाई जो बच्चों के लिए हो। इसलिए हमें सजा दी जाती है।"

"वह बच्चा कहाँ है?"

फिल्म डायरेक्टर ने कहा, "इसी डाल पर सीधे तकरीबन तीन सौ गज तक चले जाओ। आगे तुम्हें रोशनी नजर आएगी। वहाँ एक बहुत बड़ा कैमरा दिखाई देगा। वह कैमरा इतना बड़ा है कि उसके शटर में से एक आदमी गुजर सकता है। तुम वहाँ जाकर कैमरे का बटन दबा के तीन दफा कहना कट..कट..कट। फिर कैमरे का शटर खुद-बखुद खुल जाएगा और तुम उसके अंदर चले जाना। आगे जा कर वह बच्चा तुमको खुद मिल जाएगा।"

यूसुफ ने कहा, "मगर उस बच्चे की कोई निशानी तो बताओ।"

फिल्म डायरेक्टर ने कहा, "उस बच्चे के दोनों हाथों में सिर्फ एक-एक अँगूठा है। बाकी सभी उँगलियाँ कटी हुई हैं।"

"ऐसा क्यों है", यूसुफ ने पूछा।

फिल्म डायरेक्टर ने जवाब दिया, "हमें क्या मालूम? हम फिल्म डायरेक्टर हैं, ज्योतिषी नहीं हैं।"

(अगले अंक में जारी)

बेलोरूसी कहानी

मुश्किल दोस्ती

–वसील वित्का

कुछ शरारती ऐसे होते हैं, कि आप उनका सिर दीवार से दे मारिये फिर भी वो क्या करेंगे– सिर्फ दाँत निपोरेंगे।

लोगों का कहना है ऐसे लड़कों से बात करना फिजूल है।

एक ऐसे ही शरारती के बारे में मैंने अपने शहर येलनिची में सुना था। येवस्त्रात स्काचिलियास दिन के समय बहुत कम बाहर निकलता था। वह एक अधेड़ उम्र का नम्र स्वभाव का इंसान था, जो कई सालों तक एक फार्म में रात के पहरेदार की तरह काम कर चुका था। गर्मियों की गर्म रातों में भी वह अपने सर्दियों का कोट और फर वाली टोपी पहनता था, टोपी का एक पल्ला उसके कोट के कॉलर पर लटका होता, और दूसरा बाहर की तरफ निकला होता मानो ध्यान से आवाज सुनने की कोशिश कर रहा हो। कन्धे पर बन्दूक लटकाये वो घर से निकलता था।

हालाँकि वह बहुत बातूनी नहीं था फिर भी वह अपने आपको उन लोगों में शामिल होने से नहीं रोक पाता था जो आपस में बातें कर रहे होते थे, वह उनकी बातों को ध्यान से सुनता और यदा-कदा अपने भी एक दो शब्द जोड़ देता और फिर अंधेरी रात में उतनी ही शान्ति से गायब हो जाता जिस तरह शामिल हुआ करता था। उसके और उसके तीन बेटों के बारे में कोई भी बुरा नहीं बोलता था। लेकिन, चौथा और सबसे छोटा बेटा, यूजिक, इतना शरारती था कि यह समझ पाना मुश्किल था कि आखिर वह करना क्या चाहता है।

और ऐसा शायद इसलिए भी था कि, घर का सबसें छोटा बच्चा ज्यादा प्यार पाता है और बिगड़ जाता है। यूजिक वैसा ही करता था जैसा कि उसके दिल में आता था और कभी किसी की नहीं सुनता था।

मुश्किल से घुटने तक के कद वाले इस बिगड़ैल बच्चे ने जब स्कूल जाना शुरू किया तो वह अपने उम्र वालों के लिए खौफ बन गया। वह अपनी क्लास के लड़के-लड़कियों को खूब परेशान करता, कभी उनकी पीठ में जोर का घूँसा जमाता, तो कभी उनकी किताबों को फाड़ देता, या फिर ऐसी ही और कई शरारतें करता। इस नालायक पर हर वक्त निगाह रखनी पड़ती थीं, न ही पिटाई और न ही धमकी का उस पर कोई असर होता।

स्कूल टीचर उसकी शिकायत उसके पिता से करती पर वह यूजिक के साथ नरमी बरतता। कई बार उसकी

हरकतों की वजह से येवस्त्रात को माफी माँगने के लिए स्कूल जाना पड़ता था। लेकिन बजाए यूजिक को सज़ा देने के वह उससे तर्क करता, उस घड़ी यूजिक अपने पिता को सुनने का ढोंग करता और जैसे ही वह आँखों से ओझल होते, वह अपनी हरकतों में मशगूल हो जाता।

किसी को यह पता नहीं था कि ये सब कब तक चलता, अगर वह घटना नहीं घटी होती जिसने सारे गाँव को उत्तेजित कर दिया।

स्कूल गर्मियों की छुट्टी के लिए बन्द हो चुके थे।

साल का सबसे अच्छा और मजेदार समय शुरू हो गया था। पेड़ों की शाखाओं पर हरियाली इस कदर छा गई थी कि नीचे से देखकर यह बताना मुश्किल था कि पेड़ की चोटी पर क्याहो रहा है।

वह पोपलर का पेड़ जो कि येवस्त्रात के घर के ठीक सामने वाली गली में था, उसकी फुनगियों पर बहुत महत्वपूर्ण घटनाएँ घट रहीं थीं।

वसंत ऋतु के आरम्भ के ठीक पहले, येवस्त्रात के पड़ोसी एडम पेत्रूबीका और उसके बेटे तोलिक ने, उस पेड़ की चोटी पर एक पहिया बाँधा था। तोलिक चाहता था कि लकलक (सारस की प्रजाति का पक्षी) वहाँ आए और पोपलर को अपना घर बनाए।

लकलक ने भी तोलिक को निराश नहीं किया। उनका एक जोड़ा वहाँ उड़कर आया और उस पहिए पर अपना घोंसला बनाकर रहने लगा। ये पक्षी लोगों पर बहुत भरोसा करते थे, बहुत करीब से उनके घरों के ऊपर चक्कर काटते, कभी उनके घरों के पिछले बाड़े में घूमते थे।

आप गलियों में इन लक़लकों को मुर्गियों के बच्चों के साथ खेलते देख सकते थे, साथ ही मुर्गे इन लक़लकों को घूरते नजर आते थे, माने वे इन दोनों की दोस्ती से प्रसन्न न हों।

जबकि ये बुद्धिमान और सहृदय नवागन्तुक घोंसला बनाने, अपने बच्चों को बड़ा करने, उन्हें सुबह से लेकर शाम तक दाना खिलाने में लगे थे, यूजिक और तोलिक के बीच घनिष्ठ दोस्ती पनप रही थी।

यह बहुत असम्भव लगने वाली बात थी, क्योंकि अभी कुछ दिनों पहले तक ये दोनों अकसर ही लड़ते हुए नज़र आते थे, स्कूल के मैदान में दोपहर के खाने के वक्त एक दूसरे से गुंथे रहते थे, घंटी बजने के बाद कक्षा में

प्रवेश करते थे खुली कमीज और टूटे बटनों के साथ और कभी कभार तो नाक से खून बहता होता था।

और अब हालत ये थी कि दोनों एक दूसरे के बगैर एक दिन भी नहीं रहते थे। इस प्रगाढ़ दोस्ती के पीछे छिपा कारण था लकलक पक्षी का जोड़ा।

जब लकलक पक्षियों के बच्चे अभी छोटे थे, नर और मादा लकलक बारी-बारी से बच्चों के लिए दाना लाने जाते थे, परन्तु इन बच्चों के बड़े होने के साथ दोनों ही दाना लाने जाते फिर भी बच्चों को भोजन कम पड़ता था।

इन नन्हें बच्चों को देखने के लिए दोनों लड़के घोंसले

के किनारे पर एक-दूसरे को जोर से पकड़कर खड़े होते थे ताकि ऊँचाई से गिर न जाएं, बच्चों को देखकर दोनों बहुत खुश होते। दोनों के घर वाले उन्हें डाँटते पर वे मानते नहीं। रोकते ऐसा करने से।

एक दिन यूजिक ने कहा-"तोलिक, चलो घोंसले तक चढ़ते हैं और एक बच्चा तुम्हारे और एक अपने लिए ले लेते हैं।"

तोलिक को यह प्रस्ताव पसन्द नहीं आया-"नहीं हम ऐसा नहीं कर सकते हैं, ये बच्चे भूख से मर जाएंगे।"

"हम उन्हें खिलाएंगे।"

"तुम उन्हें कैसे खिलाओगे?" तोलिक हँस पड़ा। "क्या तुम पोखरे से मेढ़क पकड़ोगे और यहाँ लाओगे।"

कोई उस पर हँसे, यूजिक को यह बात बिल्कुल बर्दाश्त नहीं हुई। वह तोलिक पर गुस्साया और घूर कर देखा।

"मुझे पता है तुम ऐसा क्यों नहीं चाहते!" यूजिक ने चिल्ला कर कहा। "तुम्हें लगता है ये लक्लक् तुम्हारे हैं, तुम्हारे? अब मैं जा रहा हूँ इस पूरे बेहूदे चक्के को ही पेड़ से निकाल फेंकूँगा! नीचे की शाखाओं को पकड़ कर यूजिक आसानी से पेड़ के तने पर चढ़ने लगा।

"मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगा!" तोलिक चिल्लाया वह यूजिक की तरफ लपका और अपनी पूरी शक्ति के साथ उसकी कमीज़ खींची। वह नीचे की ओर फिसला पेड़ के तने से उसका चेहरा रगड़ खाता हुआ वो जमीन पर गिरा।

पैरों पर खड़ा होते हुए और अपने गाल पर पड़ी खरोचों में दर्द महसूस करते हुए यूजिक ने मुक्का ताना और तोलिक की ओर वार करने के लिए बढ़ा परन्तु सारे लोग एक तरफ हो गए।

लक्लक् पक्षी गली के बीचो बीच पड़ा था। उसकी टाँगें जो कि अब नीली पड़ चुकी थीं उसके शरीर में अन्दर की तरफ मुड़ी हुई थीं। उसकी गर्दन बाहर की तरफ खिंच गई थी। उसके दोनों पंख जमीन पर ऐसे फैले हुए थे जैसे लग रहा था कि अब उड़ने की कोशिश कर रहे हों, पर ऐसा करने में अक्षम हों।

आह! यह पक्षी अब मर चुका था।

तोलिक को सारी गली घूमती हुई नज़र आ रही थी। उसकी आँखों के आगे अन्धेरा छा गया।

उसने पूरी ताकत लगा दी कि वह गली में ढ़ेर न हो जाए। वह बहुत ही छोटा और असहाय महसूस कर रहा था, साथ ही उसे ठंड भी लग रही थी, मानो यह तपती गर्मी नहीं जाड़े का मौसम हो।

उसे याद नहीं कि कब उसके पिता उसे घर के अन्दर ले गए, लोग क्या बातें कर रहे थे। यूजिक को खुद यह समझ नहीं आ रहा था कि वह आखिर करना क्या चाहता था? जब, वो बन्दूक ले कर घर से बाहर निकला था। वह बस तोलिक तक पहुँचना चाहता था। लक्लक् को पेत्रोवेइक के घर के ऊपर मंडराता देख उसने बन्दूक का निशाना उसकी ओर साधा और बन्दूक से निकले छर्रों ने लक्लक् को छलनी कर डाला।

और फिर सारी गली में भनभनाहट फैल गई, जैसे गली कोई मधुमक्खी का छत्ता हो।

लोग येवस्त्रात और नास्त्या स्काचिलिया को डाँटने और उलाहना देने लगे और कुछ लोगों ने तो यहाँ तक कहा कि येलनिची में अब यूजिक जैसे शैतान के अवतार के लिए कोई जगह नहीं है, इस गुण्डे से और कुछ नहीं बस शैतानी और अशान्ति की अपेक्षा की जा सकती है।

इसी बीच यूजिक वहाँ से गायब हो गया।

आवेग लोगों पर इस कदर हावी हो गया था कि गर्मियों के स्वच्छ आकाश में शुरू हो रहे कोलाहल पर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया।

न केवल शोकाकुल माँ लक्लक् पक्षी बल्कि लक्लकों के एक पूरे झुंड को इस दुःखद घटना के बारे में खबर मिल गई। और अब वे पेत्रोवेईका के पुराने पोपलर के पेड़ के ऊपर निराशा और विषाद में चीत्कार कर रहे थे।

भूखे छोटे लक्लक् आतंक से अपने घोंसले में एक दूसरे से सट कर खड़े थे।

क्षुब्ध लक्लकों का झुँड अब लोगों के सिरों के ऊपर उड़ रहा था। ऐसा लग रहा था मानों आस-पास के घोंसलों में रहने वाले सभी लक्लक् उड़ कर चले आएं हों।

जैसे ही लोग अपने-अपने घरों में चले गए, सारे

लक्लक् गली में उतर आए। उन्होंने मरे हुए लक्लक् को चारों तरफ से घेर लिया और शोक में चीखने लगे, वे काफी देर तक शान्त नहीं हुए। लोगों के चेहरे खिड़कियों से सटे हुए थे। ये सारी घटना तोलिक के घर के ठीक सामने हो रही थी। जल्द हीं यह सब तोलिक की माँ के बर्दाश्त के बाहर हो गया। वह बाहर की तरफ भागी और जोर से बोली : "लोगो, पड़ोसियो, कुछ न कुछ तो करना ही होगा।" येवस्त्रात स्काचिलिया कुदाल के साथ अपने बाड़े के बाहर आया। दूसरे घरों से वयस्क और बच्चे भी बाहर आ गए।

सारे लक्लक् पक्षियों ने पंख फैलायें और हवा में फिर से गोल घेरा बना कर उड़ने लगे।

स्काचिलिया मरे परिन्दे के पास पहुँचा, अपने कुदाल को सड़क की बगल वाली ज़मीन में गड़ाया और गड्ढा खोदने लगा।

हर किसी को यह साफ दिख रहा था कि येवस्त्रात अब खामोश थे, किन्तु येवस्त्रात के बगीचे में लम्बे समय तक मँडराते रहे, लोगों को नज़रअन्दाज करते हुए अभी-अभी बनी कब्र की मिट्टी के ढेर के चारों तरफ फुदकते रहे।
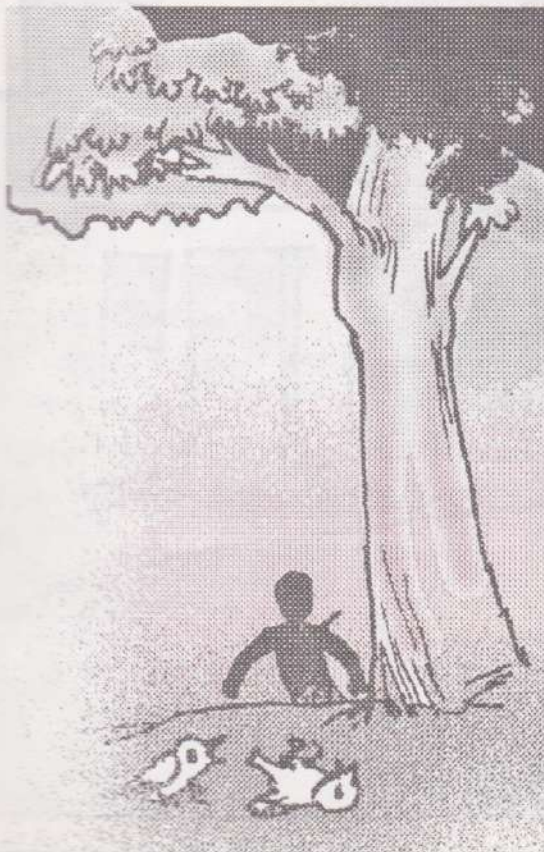
शाम होते होते दोनों छोटे लक्लक् घोंसले से गिर गए। वो अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुए थे। यह कह पाना मुश्किल था कि आखिर ऐसा क्यों हुआ, इसका कारण शोक भी हो सकता है, या फिर सारे दिन के भूखे ये बच्चे कमजोर हो गए होंगें।

ऐसा लग रहा था जैसें माँ लक्लक्, इस बात को समझते हुए कि वह अब अकेले इन बच्चों को नहीं खिला सकती, उन्हें मरने के लिए छोड़ गई हो। परन्तु बच्चे लक्लक् अभी तक जिन्दा थे। जब तोलिक उन्हें घर के अन्दर ले आया, उन्हें खाने के लिए बजरे का दलिया दिया, गर्मी के लिए उन्हें चूल्हें के पीछे रखा और उन्हें एक कोट से ढ़क दिया तो वे सीना फुला कर ऊपर उठे और अपने नन्हीं चोंच से तोलिक की बाँह को पकड़ने लगे।

जब पेत्रोबीचीक के घर में सभी सो चुके थे, यूजिक की माँ ने खिड़की को ठकठकाया। "तोलिक!" उसने दुःखी स्वर में पुकारा।

तोलिक अपने बिस्तर से कूदा और बाड़े की तरफ भागा जहाँ से आवाज आ रही थी।

"तोलिक, मेरे प्यारे बच्चे! हमारा यूजिक कहीं चला गया है, और हमें पता नहीं कि हम उसे किस ओर तलाशें। उसके पिता हर तरफ देख चुके हैं....."

तोलिक घर वापस गया और लैम्प जलाया। येवस्त्रात की पत्नी अपने घर की ओर फिर से भाग कर गई।

वह नंगे पाँव दालान के चारों तरफ बिछे बड़े पत्थरों से लग कर, धीरे-धीरे रोती हुई और शिकायत करती हुई टहलने लगी।

"ओह, कब सुबह होगी...मुझे हर किसी को देखना है... मेरा प्यारा बेटा, मेरा अनमोल लाडला," वह और जोर से रोने लगी जब उसने तोलिक को लैम्प के साथ देखा। "मैं आशा करती हूँ, कि वह कुछ भयानक नहीं सोच रहा हो.... अब मैं जा रही हूँ। लोगों से एक बार फिर पूछने, शायद मुझे कुछ पता चल जाए..." और वह गली

की तरफ बढ़ती हुई रात में खो गई।

तोलिक येवस्त्रात के बाड़े को पार करते हुए आगे बढ़ा। वास्तव में यूजिक के यूँ गायब हो जाने से वह चिंतित था, वह याद कर रहा था, सुबह की घटना को, आवेगशील यूजिक के अपराधी चेहरे को जो लोगों के सामने खड़ा था। उसका दोस्त जो कि कष्टसाध्य था और दोस्ती मुश्किल में पड़ चुकी थी, फिर भी उसके प्रति कर्त्तव्य की भावना ने तोलिक को बाध्य किया कि वह बिना एक पल गँवाये अपने दोस्त की तलाश में रात को निकल पड़े।

जो पहली चीज़ तोलिक ने की वह यह थी, कि वो येवस्त्रात के घर की अटारी पर चढ़ गया। छत के नीचे, खिड़की के पास की जगह को देख कर यह साफ जाहिर हो रहा था कि यूजिक वहाँ काफी देर तक खड़ा रहा होगा। पिछले साल के घास के ढ़ेर पर यूजिक के पैरों की धूल पड़ी थी। इसका मतलब यह था कि यूजिक ने वह सब कुछ सुना और देखा जो आज इस गली में घटित हुआ।

अहाते से नीचे उतरते हुए तोलिक बाड़े की तरफ बढ़ा। अपने मार्ग को लैम्प से रौशन करते हुए बड़े डर और अनिश्चितता में, वह कुँए के पास रूका, पर वह उसकी अंधेरी गहराई में देखने में डर रहा था, उसने उस
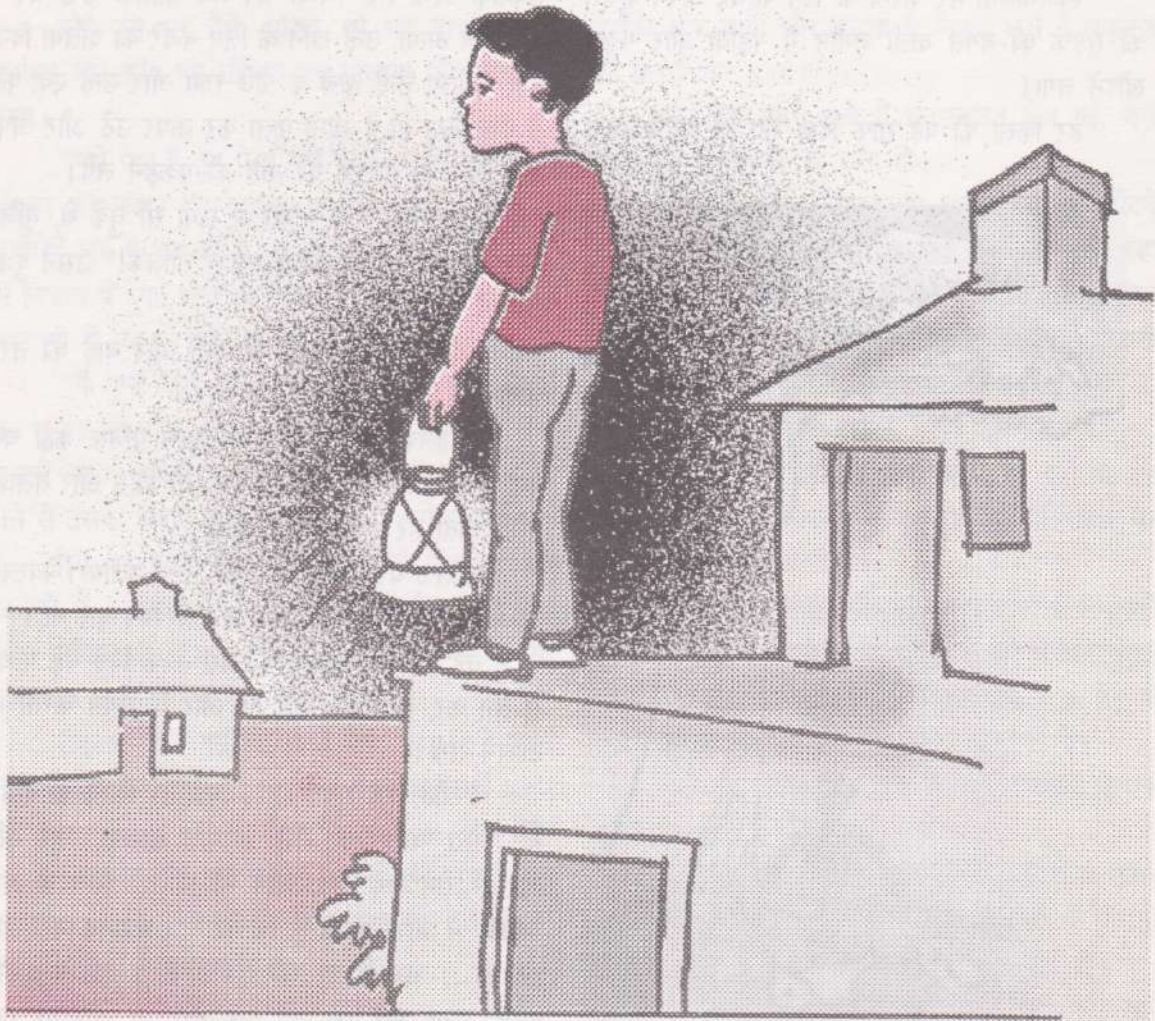
हल्के छोटे फाटक को खोला और नाली से सटे-सटे बगीचे के आखिर में पहुँचा।

आलू के पौधों पर जमी ओस को ठोकर मारते हुए वह ठीक वहीं पहुँच गया जहाँ येवस्त्रात ने लक़लक़ को दफनाया था।

लैम्प की तेज रोशनी चेरी के पेड़ के पास वाली खाली जगह पर पड़ी। हाँ, यूजिक वहीं पर था। वह उसी मिट्टी के ढ़ेर के पास सिमट कर बैठा था, और वहीं माँ लक़लक़ उससे कुछ दूरी पर नाली के किनारे खड़ी थी। उसकी आँखें उदास थीं और उनमें निन्दा भरी हुई थी।

यूजिक टस से मस न हुआ।

तोलिक ने उसे कोहनी के पास से पकड़ा और उसे अपनी पूरी ताकत के साथ खींचा।

यूजिक उठा। डगमगाता हुआ अपने कदम रखे, ठीक वैसे ही जैसे कि कोई बच्चा अपना पहला कदम रखने की कोशिश कर रहा हो, वह तोलिक के पीछे आज्ञाकारी की तरह चलने लगा।

वो दोनों शान्ति से नाली के किनारे चलते हुए, बाड़े को पार कर स्काचिलिया के घर पहुँचे। घर की चौखट पर, यूजिक बड़ी धीमी आवाज में जो कि बमुश्किल से सुनाई पड़ रही थी बोला : "अब क्या होगा, तोलिक?"

"मुझे नहीं पता।"

दोनों बहुत देर तक शान्त खड़े रहे, तब तोलिक ने लैम्प के शीशे को उठाया और बत्ती बुझा दी। चेरी के पेड़ के पीछे, आसमान में सुबह का सूरज निकल रहा था।

"क्या वह पूरी रात उसी तरह खड़ी थी?"

"पूरी रात," यूजिक ने शर्म से अपना सर झुका लिया। मेरे पास दो बच्चे लक़लक़ हैं, चूल्हे के पीछे। वे घोंसले से गिर गए थे," तोलिक ने कहा।

"अब हमें उनकी देखभाल करनी है, जब तक कि वो बड़े न हो जाएें।"

"हाँ, हम करेंगे," यूजिक सहमति में बोला।

अनुवाद : लता
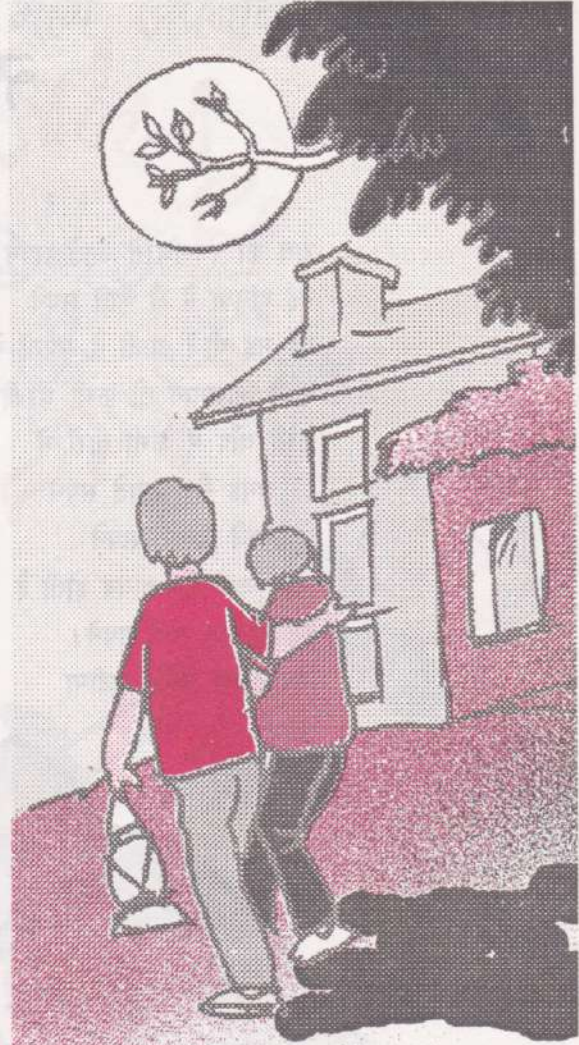
सपने

रात को रंग-बिरंगें आते सपने
नई दुनिया में ले जाते सपने
नई-नई चीजें आती हैं सपनों में
कभी आसमान तो कभी धरती में
कभी चाँद में कभी तारों में
हर जगह सैर कराते सपने
खूब मजे दिलाते सपने
सुबह जब नींद गायब होती है
वैसे ही उड़ जाते सपने।

—अमिताभ सिंह, खटीमा
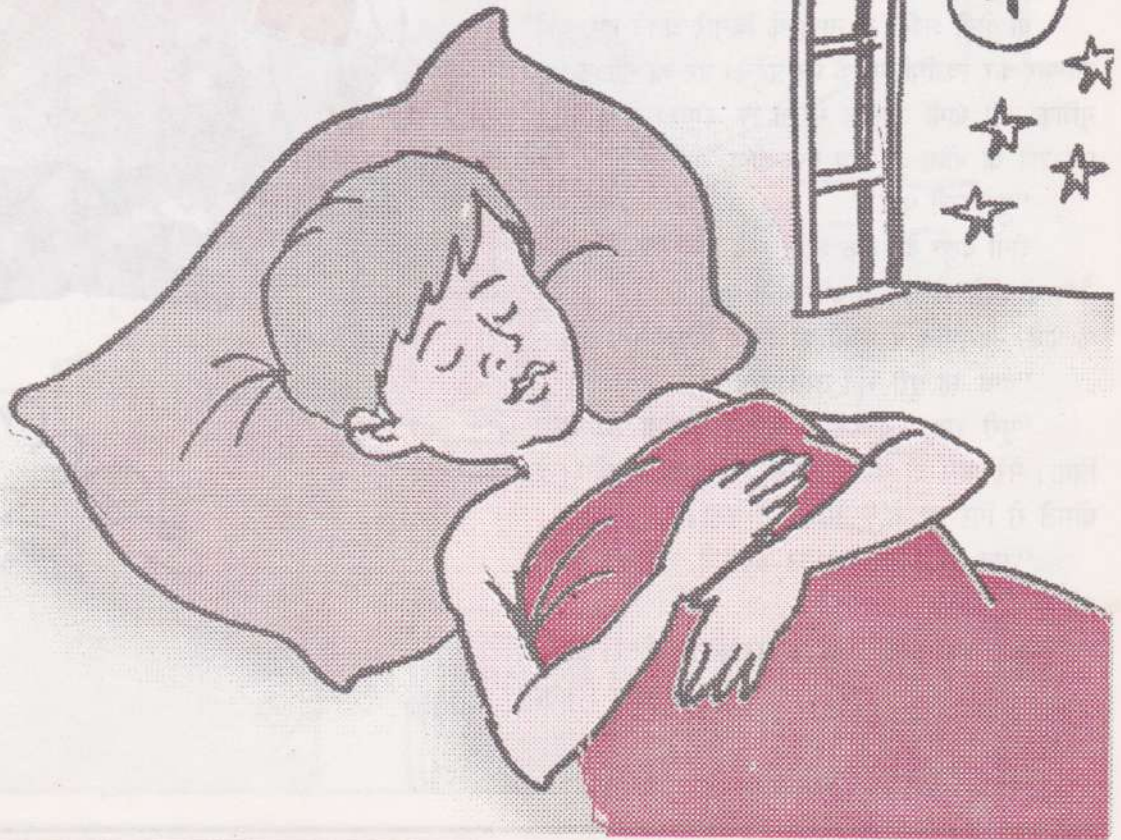
कविताएँ

सत्य मार्ग अपनाना

सुबह निकलता हौले सूरज
साँझ हुई छुप जाता!
फिर चन्दा धीरे से आकर
नई रोशनी लाता।।

दोनों सदा सिखाते सबको
पथ पर बढ़ते जाना!
स्वार्थ रहित सेवा करना तुम
सत्य मार्ग अपनाना।।

—अनिल द्विवेदी "तपन", कनौज
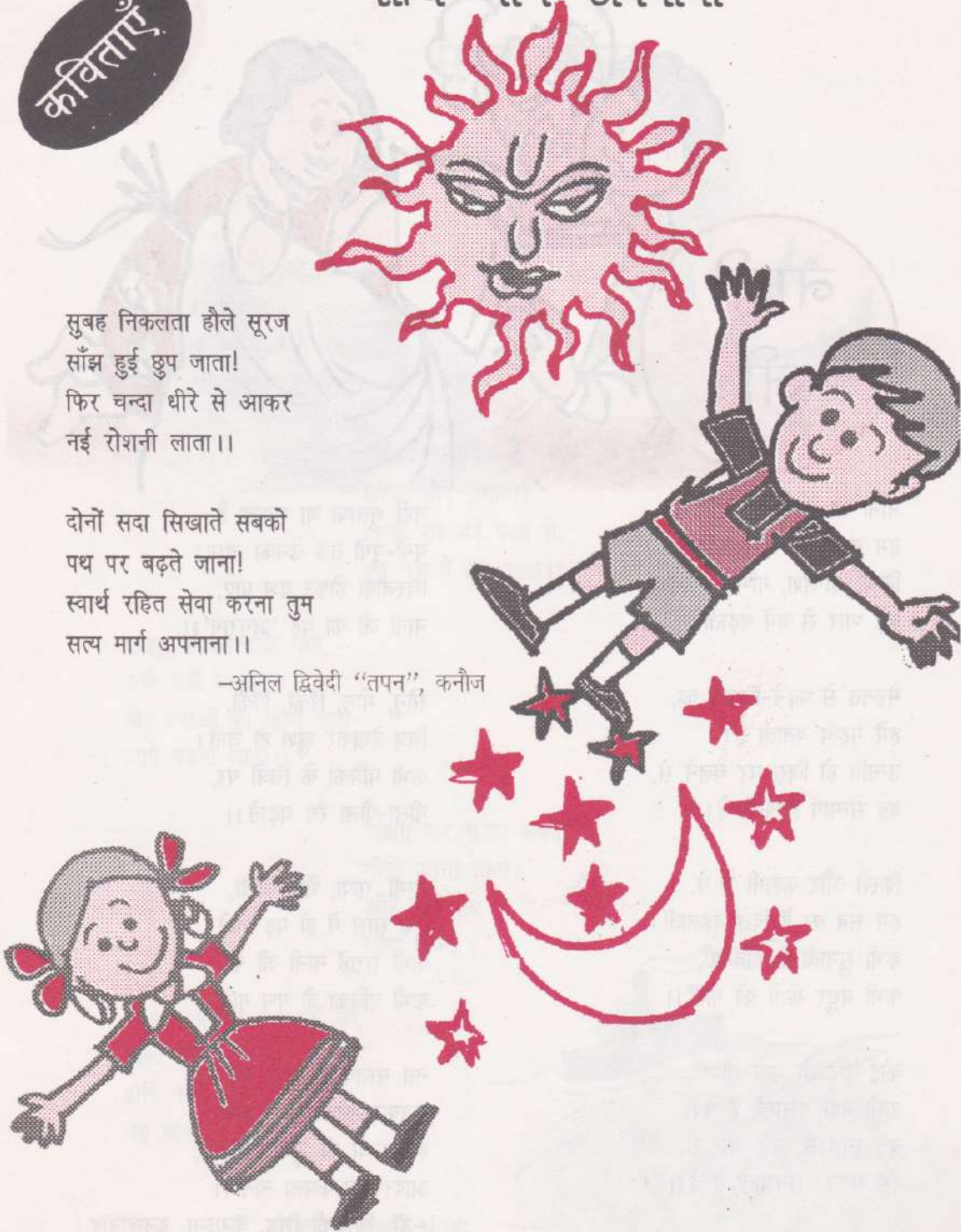
नानी जी

नानी जी हैं कुशल शिक्षिका,
हम बच्चों का ज्ञान बढ़ातीं।
हिन्दी, इंग्लिश, गणित, संस्कृत,
बड़े प्यार से हमें पढ़ातीं।।

मेहनत से पढ़ने-लिखने का,
हमें महत्व बताती हैं।
उन्नति हो जिस पर चलने से,
वह सन्मार्ग दिखाती हैं।।

किस्से और कहानी से वे,
हम सब का हैं दिल बहलातीं।
कभी सुनाती हैं कविताएँ,
कभी मधुर गीतों को गातीं।।

कोई त्रुटि हो जाये तो भी,
कभी नहीं गुस्साती हैं वे।
बड़े स्नेह से, बड़े प्यार से,
हम सबको समझाती हैं वे।।

नहीं भुलाया जा सकता है,
युगों-युगों तक उनका त्याग।
चिरजीवी होकर यश पाए,
नानी जी का यह 'अनुराग'।।

सोनू, मोनू, रिंकी, पिंकी,
चित्र देखकर खुश हो जाते।
कभी पत्रिका के चित्रों पर,
नीला-पीला रंग चढ़ाते।।

मम्मी, पापा, भैया, दीदी,
एक साँस में ही पढ़ जाते।
कभी सराहें नानी जी को,
कभी पत्रिका के गुण गाते।।

नत मस्तक हो जाते हम सब,
सुनकर उनकी मीठी बानी।
हर बच्चों की शुभचिन्तक हैं,
आदरणीया कमला नानी।।

–डॉ. त्रिलोकी सिंह, करछना, इलाहाबाद

एल्बाट्रॉस

सबसे बड़ा समुद्री पक्षी,
नभ में उड़ने वाला।
दक्षिण ध्रुव का वासी है यह,
यायावर मतवाला।।

सर्वप्रथम यह वायुयान सा,
सरपट दौड़ लगाता।
इसके बाद बड़े पंखों से,
यह नभ में उड़ जाता।।

साहस हिम्मत वाला पक्षी,
कभी नहीं घबराता।
चीर हवाओं का सीना यह,
आगे बढ़ता जाता।।

रखता याद रास्ता अपना,
मीलों उड़ता जाता।
और याद जब
सीधा वापस

कभी-कभी यह जलयानों का,
मीलों पीछा करता।
हानि नहीं पहुँचाता, शायद–
यह मानव से डरता।।

–डॉ. परशुराम शुक्ल, दतिया

होल्गर पुक्क की दो छोटी कहानियाँ

मेरा दुर्भाग्य

मैं एक सुन्दर साबुन की टिकिया था। गोल और गुलाबी। और बहुत ही सुगंध से भरा हुआ। निश्चित ही अपनी इतनी तारीफ करना अच्छी बात नहीं है। यह शेखी बघारने जैसी बात है, लेकिन मैं वाकई बहुत बढ़िया साबुन की टिकिया था।

महरी ने मुझे उठाया और वाश-बेसिन के पास रख दिया। मैं बहुत उत्सुक था झाग फेंकने के लिए। टर्मो वाश-बेसिन के पास आया। उसने नल खोला और मुझे उठा लिया। अपने शरीर पर ठण्डा पानी पड़ने से मैं बहुत अच्छा महसूस कर रहा था।

मैंने झाग फेंकना शुरू किया और बहुत ही बढ़िया खुश्बू फैल गयी।

तभी टर्मो ने अपनी हथेली को बहुत ज़ोर से दबाया और मैं हवा में उछल गया। यह मेरे लिए बहुत ही भयावह था। सौभाग्य से उसने मुझे फिर से पकड़ लिया।

मैंने पहले सोचा यह अचानक ही हुआ होगा लेकिन मैं गलत था, ऐसा जानबूझ कर किया गया था। उसने फिर मुझे छोड़ दिया। और फिर छोड़ दिया, और फिर छोड़ दिया... और फिर...।

मैं मृत्यु से बुरी तरह डर गया और झाग फेंकना भूल गया।

अंततः मैं एक धमाके के साथ फर्श पर गिर पड़ा। इससे पहले कि टर्मो मुझे उठाता, कुर्लो दौड़ता हुआ आया और मेरे ऊपर फिसल पड़ा।

बहुत आसान है यह जानना कि क्या हुआ होगा। कुर्लो नीचे गिर पड़ा और रोने लगा। मैं फर्श से उछलकर लॉकर के नीचे पहुँच गया।

अब मैं भयंकर दिख रहा था। पूरी तरह टूटा-फूटा और धूल-मिट्टी से सना हुआ। मैं डर गया कि अब मैं कभी भी झाग नहीं फेंक सकता और किसी को फिर से साफ नहीं कर सकता।

मुझे अपने लिए भी दुख था और दूसरों के लिए भी। मैंने सुना–कुर्लो चिल्ला रहा है। वह अपने घुटने को साफ कर रहा था।

बच्चे जब लंच के लिए कमरे में आए तो मैंने टीचर को उन्हें (उन बच्चों को) डाँटते हुए सुना। उनके हाथ गंदे थे क्योंकि मैं गुम हो गया था। मैंने प्रिंसिपल को महरी से कहते हुए सुना कि वाशरूम में कोई साबुन क्यों नहीं है?

मैं बहुत दुखी था, लेकिन मैं गुस्से में भी था। भयंकर गुस्से में। अगर मैं कभी लॉकर के नीचे से बाहर आ पाता तो अपने रिश्तेदारों के पास जाकर कहता–

"कभी भी टर्मो के हाथ में झाग मत छोड़ना, और कभी भी उसे साफ मत करना। उसे वैसा ही गंदा बने रहने देना जिसे कोई पसंद नहीं करता।"

इस बारे में मैं कुछ नहीं कर सका

मैं प्लेट में आराम से पड़ा हुआ था और मेरी सुनहरी चिकनी आँखों को वेली कनखी से देख रही थी। ओह! कितना बढ़िया मेरा स्वाद था। रसोइये ने मुझे बहुत अच्छी-अच्छी चीज़ों से बनाया था–सूज़ी, दूध, मक्खन, चीनी, किशमिश।

लेकिन वेली ने चम्मच से मुझे कुरेदा और छोटे-छोटे टुकड़े कर दिये। जैसे कि मैं कोई बेस्वाद सी चीज़ था। उसने उठाया और जैसे ही चम्मच से मुँह में डाला उसने ध्यान दिया कि अन्य सभी बच्चों की प्लेटें खाली हो चुकी हैं। उसने सर्तक होकर जेब में मुझे डाल लिया।

टीचर ने उसे यह सब करते हुए नहीं देखा। उन्होंने अपनी पूरी पुडिंग खत्म करने के लिए वेली की तारीफ की।

फिर हम सोने के लिये सीढ़ियों के ऊपर गये।

मेरी सुन्दर, सुनहली, मक्खनी आँखें अदृश्य हो गयीं। उसकी जेब के अन्दर से मैं टपकने लगा और सीढ़ियों पर, वेली की फ्राक में, मोजे में और उसकी चप्पलों के नीचे फैल गया।

ऊपर के आराम घर से वेली ने अपनी पोशाक उठायी और मुझे बुरी तरह फेंक दिया। दूसरे बच्चे जो उधर से फर्श पर गुजर रहे थे। अनजाने ही अपने कदमों से मुझे कुचल दिया और मैं उनके जूते के तलवे में चिपक गया। जल्दी ही मैं सब जगह उपस्थित था। खिड़की पर, बिस्तर के बीच में, फर्श के मध्य में, यहाँ तक कि बिस्तर में भी। मेरी वजह से तकिये, कम्बल, मोजे, कुर्सी, मेज सभी मैले हो गये। मैं जानता था कि यह शरारत मेरी वजह से हुई लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता था।

जब टीचर आयीं तो उन्होंने वेली को खूब फटकारा। महरी ने मुझे उठाया और जो कुछ मैं शेष बचा था, उसे उठाकर भयंकर कूड़ेदान में फेंक दिया।

अब मैं यहाँ हूँ। मेरे जीवन का यह सबसे दुखद अन्त था। फिर भी मैं अपनी सुनहरी चिकनी आँखों वाला बहुत ही स्वादिष्ट पुडिंग था।

–अनुवाद : नमिता

हास्य कथा

नेकी कर दरिया में डाल

रामू ग्वाले की भैंस रामप्यारी आज उदास है। चरकर आने के बाद से ही रामप्यारी मुँह फुलाए हुए है। आज चरकर आने के बाद न तो रोज की तरह उसने नाँद में से पानी पिया और न ही ही बाँ-बाँ करके रामू को अपने आने की सूचना ही दी।

रामू ग्वाला इन सब बातों से अनभिज्ञ था। उसने रोज़ की तरह खैनी को अँगूठे से रगड़ा और दो-तीन बार ठोंककर अपने निचले होंठ के भीतर दबाया, बाल्टी उठायी और आ गया रामप्यारी के पास दूध निकालने। लेकिन यह क्या! रामू ने जैसे ही बाल्टी जमीन पर रखी, रामप्यारी छिटककर दूर जा खड़ी हुई। रामू आश्चर्य चकित रह गया।

रामू ने रामप्यारी की नाराजगी भाँप ली। उसने बनावटी प्यार दिखाते हुए कहा-''क्या हुआ रामप्यारी? आज तू कुछ नाराज़ लग रही है।'' रामप्यारी भरी बैठी थी; उसने चिल्लाते हुए कहा-''देख रामू, अब मैं तेरी सारी चालाकी समझ गयी हूँ। मुझे तेरे पड़ोसी राघव ग्वाले की भैंस और रिश्ते में मेरी बहन फूलमती ने सब-कुछ बता दिया है।'' इतना कहकर रामप्यारी दूसरी तरफ मुँह करके जुगाली करने लगी। रामू घूमकर पहुँचा रामप्यारी के सामने-''अरे क्या समझ गयी; खुलकर बता तो सही।''

''बताने को क्या है। तू खुद नहीं जानता जैसे।'' इतना कहकर रामप्यारी ने दो बार अपनी पूँछ हिलाई और एक नज़र अपनी पँडिया फूलो पर डालकर आगे कहना शुरू किया-''तू मेरा सारा दूध निकाल लेता है। अरे दुष्ट! कम से कम मेरी फूलो के लिए तो थोड़ा बहुत छोड़ दिया कर। देख कैसे दुबली होती जा रही है बेचारी।'' इतना कहते-कहते रामप्यारी रुआँसी हो उठी।

रामू चालाक था। वह सारी बात समझ गया। उसंने रामप्यारी की सींगों पर हाथ फेरते हुए कहा-''रामप्यारी तू भैंस की भैंस ही रहेगी। मैं तेरे लिए खेतों से चारा काटकर

लाऊँ, तुझे चोकर-आटा दूँ, तुझे नहलाऊँ और आज तूने मेरे लिए इतना बड़ा आरोप लगा दिया।" रामप्यारी भी आज मूड में थी। उसने रामू की बात बीच में ही काट दी–"रामू! तू मुझे चोकर-आटा देता है तो क्या तू मेरी फूलो के हिस्से का भी दूध पी जाएगा। ऐसा मैं नहीं होने दूँगी; चाहे तू जो समझ।" रामू तैश में आ गया–"अरे दुष्ट भैंस तू क्या समझती है कि मैं तेरा दूध तेरी पँडिया को इसलिए नहीं देता कि तेरा दूध बेचकर पैसे कमा सकूँ?" रामप्यारी ने रामू के चेहरे पर नज़रे गड़ा दीं। मानो पूछ रही हो "हाँ, तो और क्या?" रामू ने सर पर अँगौछा कसकर बाँधते हुए आगे कहना शुरू किया–"अरे मैं तो इसलिए तेरी फूलो को दूध नहीं देता था, क्योंकि तेरे दूध में वसा बहुत होती है; और इसलिए तेरा दूध पीकर तेरी बिटिया मोटी थुलथुल न हो जाय। बता भला; फिर कौन करता तेरी मोटी थुलथुल फूलो से व्याह?" रामप्यारी रामू की बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी। रामू की बातें उस बेचारी भोली भैंस को सच्ची लगीं। अब उसने सिर नीचा कर लिया। रामू समझ गया कि तीर निशाने पर लगा है। उसने बाल्टी उठाई और दूध दुहने लगा। बीच-बीच में भुनभुनाता भी जा रहा था–"जमाना ही खराब है; अरे भलाई का तो जमाना ही नहीं रहा।" वगैरह..... रामू सिर नीचा किए दूध दुह रहा था।

थोड़ी देर तक कुछ सोचने के बाद, रामप्यारी ने पीछे मुड़कर कहा–"लेकिन रामू भइया। एक बात तो तुम्हें माननी ही पड़ेगी, कि आखिर मेरी उपलियों से तुम्हारा ईंधन का खर्च बचता है और तुम्हें गैस नहीं लेनी पड़ती।" यह कहकर रामप्यारी प्रश्नवाचक दृष्टि से रामू को एकटक देखने लगी।

रामू थोड़ी देर शान्त रहा। उसने अपना अँगौछा एक बार फिर कसकर बाँधा और बोला–"रामप्यारी तू जितनी मोटी है, तेरी अक़्ल भी उतनी ही मोटी है।" रामप्यारी आग-बबूला हो उठी–"अरे! तो क्या मैंने गलत कहा है? क्या तुम मेरे उपलों पर खाना नहीं बनाते और जाड़े के दिनों में उन्हें जलाकर तापते नहीं हो क्या?" "जलाता हूँ-जलाता हूँ। लेकिन क्या पैसे बचाने के लिए? अरी मूर्ख भैंस! ये भी मैं तेरे ही भले के लिए करता हूँ। पूछ कैसे?" कहकर रामू शान्त हो गया। रामप्यारी चुपचाप खड़ी थी। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। रामू ने बात आगे बढ़ाई–"अच्छा चल ये बता कि मैं तेरे गोबर के उपलों को ढँककर क्यों रखता हूँ?" इतना कहकर रामू ने फिर दूध दुहना शुरू कर दिया। रामप्यारी ने थोड़ी देर तक कुछ सोचा फिर बोली–"ताकि वे बारिश में भीगें नहीं और तुम उन्हें आसानी से जला सको।" रामू गुस्से में चिल्लाया–"रामप्यारी! अब ये बात सिद्ध हो गयी है कि भूसा खाते-खाते तेरे दिमाग में भी भूसा भर गया है। अरे मूर्ख मैं इस तेरे गोबर को सुखाकर ढककर इसलिए रखता हूँ कि कहीं नगर निगम वाले यह देख न लें कि तू इस तरह चारों तरफ गन्दगी करती फिरती है। और तुझे ले जाकर कांजी हाउस में बन्द कर दें और पीटें तुझे वो अलग।"

रामप्यारी की आँखों में आँसू आ गए। रुँधे गले से किसी तरह वह इतना ही कह पायी–"रामू भैया, मुझे माफ कर दो; मैंने तुम्हें गलत समझा।" रामू चेहरे पर बनावटी दुःख का भाव ले आया–"अरे कोई बात नहीं रामप्यारी; अपना तो वही हाल है कि 'नेकी कर दरिया में डाल।' " इतना कहकर रामू ने दूध की भरी हुई बाल्टी उठाई और घर के भीतर चला गया।

–विवेक कुमार त्रिपाठी
सन्त रविदास नगर, भदोही

ज्ञान-विज्ञान

जहाज को पाल की क्या आवश्यकता है?

एक बार बच्चे अपने दोस्त महेश के साथ पालों के जहाज पर बैठे झील की सैर कर रहे थे। अचानक महेश बोला :

–बड़ी अजीब बात है, हवा तिरछी दिशा में चल रही है हमारा जहाज आगे की ओर जा रहा है!

–हाँ, ठीक है,–मोहन बोला,–वास्तव में हवा एक दिशा में चल रही है और जहाज उसकी विपरीत दिशा में जा रहा है।

–हमारे जहाज में पाल क्यों लगा हुआ है? –हेमा ने पूछा।

–खूबसूरती के लिये,–महेश ने जवाब दिया।

सब गंभीर होकर बैठे रहे क्योंकि किसी को भी इस प्रश्न का सही उत्तर ज्ञात नहीं था।

–कमाल है, तुम लोग भी कैसे समुद्री यात्री हो, –हेमा हँसती हुई बोली, –चलो, यह बताओ, जहाज को आगे बढ़ाने के लिये क्या किया जाना चाहिये?

–पत्थर या कोई दूसरी चीज पीछे की ओर फेंकनी चाहिये, –गीता ने जवाब दिया हालाँकि उसे लग रहा था कि शायद यह उत्तर ठीक नहीं है।

–यह चीज हवा भी हो सकती है, –हेमा ने गीता की बात पूरी की।

–पर हम हवा को पीछे कैसे फेंक सकते हैं, वह तो तिरछी बह रही है? –मोहन ने आश्चर्य में भरकर पूछा।

–इसी काम के लिये ही तो जहाज में पाल लगाये जाते हैं, –हेमा ने उत्तर दिया और वह ऊपर की ओर इशारा करके बोली :

–वह देखो, पाल हवा के प्रति तिरछे चढ़ाये गये हैं, तुम्हें दिखाई दे रहा है?

–हाँ! –बच्चों ने एक स्वर में जवाब दिया।

–हवा इस पाल से टकराकर पीछे की ओर लौटती है और जहाज को वह आगे की ओर धकेलती है। समझे?

–हाँ, –बच्चों ने जवाब दिया, हालाँकि उनके चेहरों से पता लग रहा था कि उनकी समझ में यह बात अभी तक पूरी तरह से नहीं आयी थी कि पालों की तिरछी ओर से चलती हुई हवा किस प्रकार पीछे की ओर लौट जाती है।

–जिस तरह सूरज की किरण दर्पण से टकराकर

पीछे पड़ती है, उस तरह! अचानक गीता की समझ में सारी बात आ गयी।

–जैसे गेंद दीवार के साथ टकराकर वापस लौट आती है, –मोहन ने गीता की बात पूरी की। उसकी समझ में भी आ गया था कि हवा पीछे की ओर कैसे लौटती है।

–हवा अगर विपरीत दिशा में बह रही हो, तब क्या करोगे? –महेश ने एक नया प्रश्न उठाया।

–पालों की दिशा बदलनी पड़ेगी, –हेमा ने उत्तर दिया।

–प्रत्येक पाल के नीचे विशेष रस्सियाँ लटकी रहती हैं, जिनको नाविक लोग लंगर कहते हैं। इन रस्सियों को खींचकर पाल को इच्छानुसार किसी भी दिशा में रखा जा सकता है, –हेमा ने बच्चों को समझाया।

हवा मंद गति से चल रही थी पर बच्चों का जहाज बड़ी तेजी से आगे बढ़ता जा रहा था। इसका कारण यह था कि इस समय जहाज के सारे पाल हवा के प्रति एक समान दिशा में ऊपर उठे हुए थे और वे काफी अधिक हवा पीछे फेंक रहे थे।

–पाल क्या केवल पानी के ऊपर ही काम कर सकता है? –मोहन ने अचानक पूछा।

–नहीं, वह हर जगह काम कर सकता है, –हेमा ने उत्तर दिया।

गर्मियों के दिन बीत चुके। अब शरद ऋतु आ गयी थी। धीरे-धीरे मौसम ठंडा होता जा रहा था। एक दिन, जब ठंडी हवा चल रही थी, बच्चों ने आंगन में एक विचित्र चीज देखी। यह एक बच्चा-गाड़ी थी जिसपर एक मस्तूल और एक पाल लगे हुए थे। उनके सामने एक प्रकार का जमीन पर चलने वाला पाल का जहाज था जिसका वैज्ञानिक नाम "पवनपालगाड़ी" है।

यह "पवनपालगाड़ी" काफी छोटी थी, इसलिये फैसला किया गया कि उसमें सबसे छोटे बच्चे महेश को बिठाया जाये। बच्चे इस गाड़ी पर महेश को बिठाकर बाहर सड़क पर ले आये। इस सड़क पर मोटर-कारें नहीं चलती थीं। बच्चों ने कुछ देर इन्तजार किया और जैसे ही तेज हवा चलने लगी, उन्होंने वह गाड़ी छोड़ दी। हवा से पाल फूल गया और इस तरह उसने गाड़ी को आगे धकेलना शुरू कर दिया। गाड़ी सड़क पर दौड़ने लगी। महेश खुश होकर चिल्लाने लगा।

अनुराग बाल कम्यून के बच्चों की कलम से

प्यारे दोस्तो,

अनुराग बाल पत्रिका के पिछले अंकों में तुमने 'अनुराग ट्रस्ट' के बारे में पढ़ा होगा। यह संस्था बच्चों के स्वस्थ सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विकास लिए बहुत से काम करती है। इन्हीं में से एक है अनुराग बाल कम्यून। यहाँ कई बच्चे एक साथ रहते हैं, पढ़ते हैं, नई-नई बातें सीखते हैं और एक स्वतंत्र माहौल में भविष्य के स्वतंत्र और जिम्मेदार नागरिक बनने की राह पर शुरुआती कदम रखते हैं। अभी गोरखपुर में चल रहे ऐसे कम्यून में रहने वाले बच्चों ने अपने कुछ मजेदार अनुभव लिखकर भेजे हैं। तुम लोग भी ऐसी चीजें लिखकर भेज सकते हो।

— सम्पादक

सावधानी हटी तो घटना घटी

जहाँ हम लोग रहते हैं उसमें एक अहाता है। उस अहाते में एक तरफ नल भी है। उस नल के पास में ही

साइकिलें खड़ी की जाती है इस अहाते में बहुत सारे गमले भी हैं जिसमें बहुत तरह के फूल तथा पेड़ पौधे हैं, हम लोग उन पेड़-पौधों में पानी डालते हैं।

एक दिन की बात है मैं उस नल के पास कपड़े धोल रहा था। मैंने उस नल से इतना पानी लिया कि नल को गुस्सा आ गया नल ने सोचा कि अब की बार आने दो। जब मैं पानी लेने लगा तो (मेरी एक आदत है जो बहुत बुरी है कि जब कोई दो आदमी आपस में बात करते हैं तो मैं उन लोगों की बात सुनने लगता हूँ या फिर मैं उस बात में दखल अन्दाजी करता हूँ। जब मैं नल से पानी ले रहा था तो मुझसे कुछ दूरी पर दो नमूने (मनोज और दीक्षा) आपस में बातें कर रहे थे तो मैं उनकी बातें सुन रहा था) सावधानी हटी तो घटना घटी। तभी नल ने सोचा कि अब मौका है नल ने मौका पाकर यों मारा मेरे सिर पर। मुझे सात टाँके लगे। पर चोट लगने के बाद मेरी बहुत देखभाल हुई। उन्हीं दो नमूनों ने मेरी देखभाल की जिनकी मैं बातें सुन रहा था। मेरी बहुत ही देखभाल की। सुबह-सुबह दो केले और एक अण्डा मिलने लगा। मुझे बहुत मजा आया। उस दिन के बाद वह नल भी खराब हो गया। आज जब भी मैं उस नल की तरफ देखता हूँ तो वह नल मेरी तरफ देखकर हँसता है।

नवीन कुमार

गंगा के किनारे मुझे मिला एक खरगोश

एक दिन मैं घर पर अकेला था। मैं बोर हो रहा था। तभी मेरे दिमाग में आइडिया आया। क्यों न गंगा के किनारे चलें। तब मैं तैयार होकर चल दिया। मैंने जाते-जाते देखा कि आगे एक तीतर जा रहा था, और उसके पीछे उसके बच्चे। पहले मैंने सोचा दौड़कर पकड़ लूँ। फिर मैंने अपने आप से कहा—छोड़ दूँ। और मैंने छोड़ दिया, और आगे बढ़ गया। आगे अचानक मुझे खर्र... खर्र.... की आवाज

सुनायी दी। मैंने बगल वाली झाड़ी में झांक कर देखा, तो मुझे एक मोर दिखाई दिया, वह नाच रहा था। मैं उसे चुपके-चुपके देखता रहा। तभी वह मुड़ा, और मुझे देखकर नाचना बन्द कर दिया, और वहाँ से भाग लिया। मैं भी चल दिया। गंगा के किनारे पहुँचा तो देखा इतने रंग बिरंगे पक्षी थे। मैं उन्हें पकड़कर घर लाना चाहता था। लेकिन, वो इतनी दूर थे कि मैं दौड़ता भी तो उन सब को नहीं पकड़ पाता। मैंने सोचा चलो उन्हें उड़ा देते हैं। मैं दौड़कर उनके पास गया, वह बहुत दूर चले गये। मेरी नज़र गंगा के पानी पर पड़ी। मैंने देखा कि एक बहुत बड़ी मछली अपने बच्चों के साथ पानी में तैर रही थी। जो चाँदी जैसी चमकीली थी और बहुत ही सुन्दर थी। फिर वह गहराई में चली गयी। उसके बाद मैं घर लौटने लगा। तभी मैंने एक सियार को खरगोश को दौड़ाते हुए देखा मुझे बड़ा गुस्सा आया। और मैंने एक डण्डा उठाया और उसे दौड़ा लिया। और दौड़ते हुए एक डण्डा खींच मारा। सियार लँगड़ाते हुए भाग गया। मैंने पलटकर देखा तो खरगोश वहाँ बेहोश पड़ा था। मैंने उसे उठा लिया और गंगा के किनारे ले गया और उसके मुँह पर पानी के छींटे मारे तब उसे होश आया। और उसने अपनी आँख खोली। और मेरे हाथ से निकलने की कोशिश करने लगा। तब मैंने उसे आराम से पकड़ा और उसे सहलाते हुए घर ले आया। सभी लोग बहुत खुश हुए और फिर उसे हम लोगों ने पाल लिया। बाद में चलकर वह मेरा पक्का दोस्त बन गया।

–सचिन

अनुराग बाल कम्यून टीम की ओर से नये वर्ष की बधाई
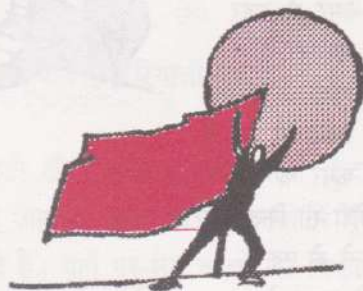
नया वर्ष है आया
अपने साथ अनेक बदलाव लाया
नये वर्ष की नई सुबह
कहती हमसे
करो एक ऐसा अजूबा
बदले जिससे
मेहनती इन्सान का नसीबा

रास्ते बहुत कठिन हैं
लेकिन हमें उन्हें
काटते हुए आगे
बढ़ते जाना है

कविता

बुद्धिजावा

बाहर कमरे से बाहर
बारिश हो रही है
अभी भूकम्प आया था
दुनिया तबाह हो रही है
अन्दर कमरे के अन्दर
एक छोटी सी किताब के
एक पन्ने के एक
छोटे से अक्षर से
दिमाग लड़ा रहा था
एक बुद्धिजीवी

-नवीन कुमार

शरारती कुत्ता

कुत्ता है बहुत बकवास
काटता सबको है बदमाश
रिंकी कहती मुझे बचाओ
इसको यहाँ से मार भगाओ
इतने में मम्मी वहाँ आतीं
कुत्ते के ऊपर वो गुस्सातीं
दो-दो डण्डे उसको लगातीं
और कुत्ते को मार भगातीं

-दीक्षा

पढ़ाई-पढ़ाई-पढ़ाई

आखिर क्या चीज़ है पढ़ाई
मास्टर जी पढ़ाएँ कुछ और
हमको समझ में आए कुछ और
वो भी एकदम सड़े हुए
बनाएँ हमको और सड़े हुए
वो भी एकदम बकवास
बनाएँ हमको बदहवास
उनको भी न कुछ आता-जाता
हमको कहते पढ़ो ज्यादा
एकदम पागल-पागल
ढ़इया भर की किताब खरीदवाएँ
ऊपर से न कुछ आए-जाए
एकदम पागल-पागल
मास्टर जी एकदम पागल

-दीक्षा

नन्हीं कलम ने लिखा

एक आहट

कभी यहाँ पर फसलें लहलहाया करती थीं, कभी यहाँ पर पेड़ों से हरियाली थी, और मैं यह मनोरम दृश्य देखा करती थी।

यहाँ पर कभी धरती प्रसन्नता से उछल कर कहा करती थी, "देखो मुझमें कितनी सुन्दरता है"। तभी कहीं से आवाज़ आई, "नकुल, नकुल तुम कहाँ हो?" वह आवाज़ आज भी मेरे कानों में गूँजती है।" आज उस जगह पर शाम के समय बच्चे घूम-घूमकर खेला करते हैं। यहाँ पर उन बच्चों का विकास हो रहा है। परन्तु कुछ दृश्य अभी भी जीवित हैं जैसे कि वह पेड़ जो सूरज डूबने के समय बहुत सुन्दर लगता है, प्रातः काल निकट के वनों से आते पक्षियों के जोड़े। इनकी छवि देखते ही बनती है। जब वर्षा ऋतु आती है तो वह रंगीन आकाश और इंद्रधनुष बहुत लुभावना लगता है परन्तु हरी-भरी फसलों के बीच वे छोटे-छोटे घर आज भी मेरी आँखों के सामने आ जाते हैं। हरे-भरे खेत के किनारे टेसू के पेड़ पर लगे लाल-लाल फूल बहुत अच्छे लगते थे। आज वह धरती कह रही है कि आज मैं उतनी सुन्दर नहीं हूँ परन्तु मैं भाग्यशाली हूँ जो मुझ पर विकास हो रहा है।

—शेफाली श्रीवास्तव, पन्तनगर

एक बंदर

मम्मी मुझको देंती डाँट
पापा कहते बंदर,
उछल कूद ये कितनी करता
घर के बाहर अंदर,

मगर एक दिन सचमुच आया
बंदर एक मेरे घर,
कपड़े लत्ते सारे लथड़े
खेल खिलौने छितरे,

पकवानों के बरतन भाड़े
सभी पड़े थे बिखरे,
सिरहाने केलों का गुच्छा
वो डॅबल बेड पर पसरे,
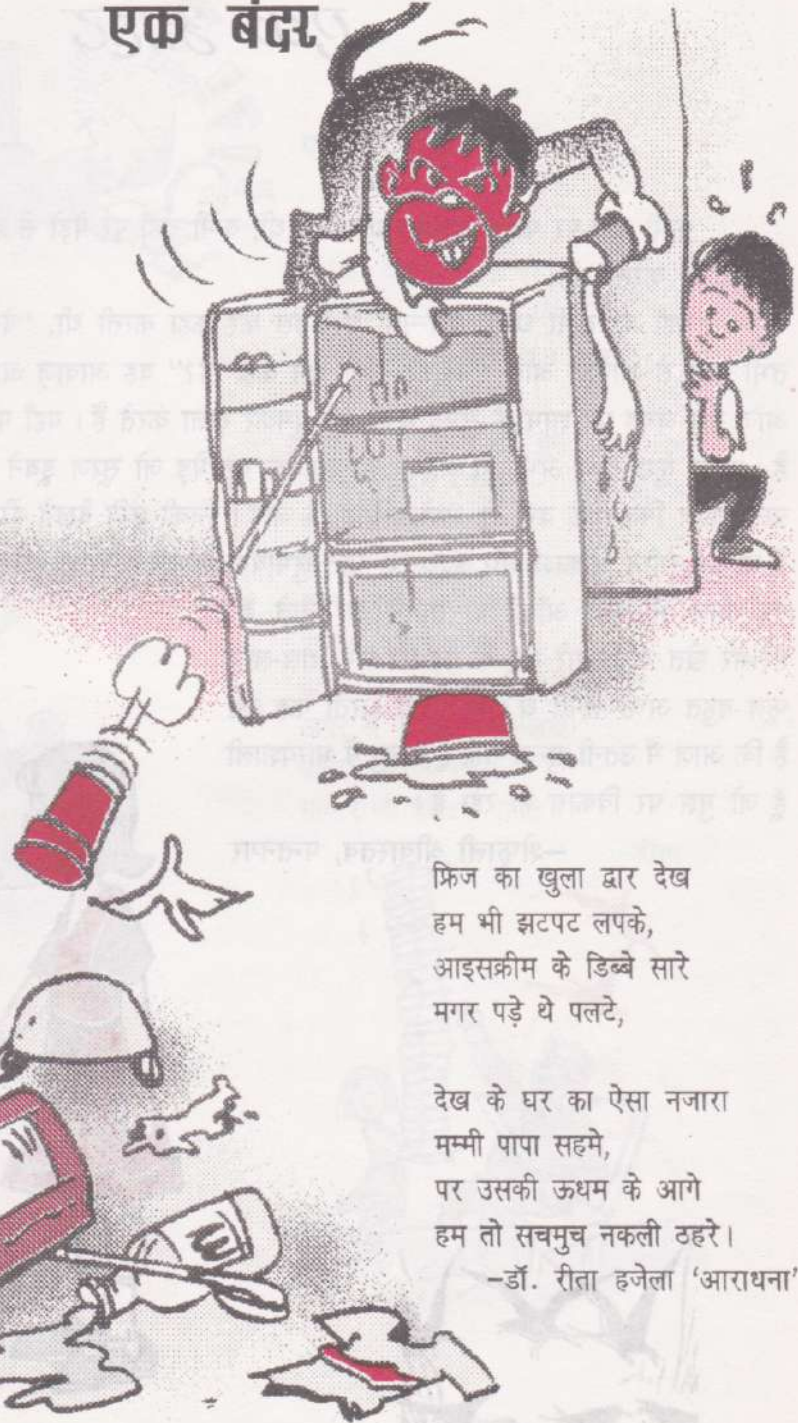
फ्रिज का खुला द्वार देख
हम भी झटपट लपके,
आइसक्रीम के डिब्बे सारे
मगर पड़े थे पलटे,

देख के घर का ऐसा नजारा
मम्मी पापा सहमे,
पर उसकी ऊधम के आगे
हम तो सचमुच नकली ठहरे।

–डॉ. रीता हजेला 'आराधना'

नन्हीं कलम ने लिखा

दोस्ती

बहुत पहले की बात है। एक जगह का नाम बालानगर था। वहाँ पर एक लेखिका रहती थी। उसका नाम वाना था। एक बार वाना कहानी लिख रही थी कि उसने देखा कि उसके घर के पीछे लोगों का जाम लगा था। वाना ने वहाँ से अपना ध्यान हटा लिया और फिर अपनी कहानी पर लौटती, कि उसका ध्यान दोबारा वहीं चला गया। काफी देर तक सोचने के बाद वाना भी उस भीड़ में शामिल हो गई। वहाँ जाकर देखा तो दो कौए एक गिलहरी को मारने की कोशिश कर रहे थे। वाना को तरस आ गया और जैसे ही वह गिलहरी को लेने के लिए आगे बढ़ी तो सब लोग बोले वाना उसके पास मत जाओ, कौए अपनी चोंच से तुम्हारे शरीर पर जख्म कर देंगे, पर वाना न मानी और गिलहरी को उठा लाई। वाना ने उसका नाम गुल्लू रख दिया। वाना उसे खाना देने लगी। जब भी वाना उसे खाना देती तो वह मटकती हुई आती पूँछ हिलाती और खाना खाकर चली जाती। वाना जब भी कहानी लिखती तो बीच में गुल्लू को ज़रूर पुकारती। वह मटकती हुई आती, वाना उसकी इस चाल को देखकर हँसने लगती। अब गुल्लू उसकी सबसे अच्छी सहेली बन गई थी। पर एक दिन वाना बहुत बीमार हो गई और उसकी मृत्यु हो गई। गुल्लू को जैसे ही पता चला कि वाना की मृत्यु हो गई तो वह रोने लगी और एक दिन तक खाना नहीं खाया।

–वृतिका, कक्षा-III
माडल स्कूल, रोहतक

कुत्ता बहुत ज़रूरी है

एक गाँव की बात है। एक धोबी के पास बहुत धन था। उसके पास एक कुत्ता और एक गधा था। गधा तो कपड़े ढोने के काम आता था और कुत्ता धन की रखवाली करने के काम आता था। एक बार खाना पूरा ना होने की वजह से कुत्ते को अच्छा खाना नहीं मिल पाया। धोबी ने उसे बासी रोटी दे दी। कुत्ता परेशान होकर उसी बासी रोटी को खा गया। काफी रात हो गई थी गधे को एक दो चोर नज़र आए। वह धोबी की घर की ओर ही आ रहे थे। इतने में ही कुत्ते ने भी उन्हें देख लिया पर कुत्ते ने उन्हें कुछ नहीं कहा और अन्दर जाने दिया। यह सब देखकर गधा ज़ोर-ज़ोर से रेंकने लगा। गधे की आवाज़ सुनकर धोबी बाहर आया और कहा कि क्या बात है जोर-जोर से क्यूँ रेंक रहे हो। तो गधा और जोर से रेंकने लगा फिर दोबारा धोबी ने पूछा कि क्या बात है तो गधा और जोर से रेंकने लगा। यह देखकर धोबी ने गधे को पीटना शुरू कर दिया। काफी देर के बाद जब गधा चुप हो गया तो धोबी अन्दर अपने बिस्तर पर जाकर सोने की कोशिश करने लगा। चोर अब धन लेकर बाहर जा रहे थे कि कुत्ते ने भौंकना शुरू कर दिया और वह चोर कुत्ते को भौंकते देख धन छोड़ कर भाग गये। दूसरे दिन सुबह पता चला कि धोबी के यहाँ रात को चोर आये थे और कुत्ते के भौंकने की वजह से चोर धन छोड़कर भाग गये।

–वृतिका, कक्षा-III
माडल स्कूल, रोहतक

बरसात

बादल गरजा बरसात हुई
केचुओं की भी बारात हुई
मेढ़क बोला, चूहा आया
चूहा भागा, बिल्ली आई
सब बच्चो ने शोर मचाया
तभी आ गयी माँ
सब बच्चों ने दौड़ लगाई
चूहा भागा, बिल्ली आई
बादल गरजा बरसात हुई
केचुओं की भी बारात हुई
नाचा मोर, मेढक गाया
सबने मिलकर खेल रचाया
बादल गरजा बरसात हुई
केचुओं की भी बारात हुई।

—अल्पना सिंह,
कक्षा-2, खटीमा

अनुराग ट्रस्ट की दिलचस्प किताबें पढ़ो

पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
नये ज़माने की परीकथाएँ	होल्गर पुक्क	10 रुपये
बेझिन चरागाह	इवान तुर्गनेव	12 रुपये
आम ज़िन्दगी की मज़ेदार कहानियाँ	होल्गर पुक्क	10 रुपये
किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफसरों का कैसे पेट भरा	मिख़ाईल सल्तिकोव-श्चेद्रीन	10 रुपये
लाख़ी	अन्तोन चेख़ोव	12 रुपये
कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला	होल्गर पुक्क	08 रुपये
कोहकाफ का बन्दी	लेव तोलस्तोय	15 रुपये
पराये घोंसले में	फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की	10 रुपये
सदानन्द की छोटी दुनिया	सत्यजीत राय	10 रुपये
दो साहसिक कहानियाँ	होल्गर पुक्क	10 रुपये
मदारी	अलेक्सान्द्र कुप्रिन	15 रुपये
गोलू के कारनामे	रामबाबू	12 रुपये
अजीबोग़रीब किस्से	होल्गर पुक्क	10 रुपये
रोज़मर्रे की कहानियाँ	होल्गर पुक्क	10 रुपये
बस एक याद	लेओनीद अन्द्रेयेव	10 रुपये
घर की ललक	निकोलाई तेलेशोव	10 रुपये
हिरनौटा	द्मीत्री मामिन-सिबिर्याक	10 रुपये
छत पर फंस गया बिल्ला और तीन कहानियाँ	विताउते जिलिन्स्काइते	15 रुपये
मनमानी के मजे	सर्गेई मिख़ाल्कोव	15 रुपये

अनुराग बाल पत्रिका यहाँ से भी प्राप्त की जा सकती है :

• अनुराग बाल केन्द्र, डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020 • जनचेतना स्टाल, निकट काफी हाउस, हजरतगंज, लखनऊ (शाम 5 से 8.30) • जनचेतना, जाफरा बाजार, गोरखपुर-273001 • जनचेतना, 989, पुराना कटरा, मनमोहन पार्क, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद • श्रीमती मधुलिका दुबे, म. नं. 178, सेक्टर-14, रोहतक (हरियाणा) • रामपाल सिंह, भारतीय जीवन बीमा निगम, आवास विकास, रुद्रपुर (ऊधमसिंह नगर) • जनचेतना, 29, यूएनआई अपार्टमेण्ट, सेक्टर-11, वसुंधरा, गाज़ियाबाद-201010 • जनचेतना, 135, एसएफएस, सेक्टर-19, रोहिणी, दिल्ली • जनचेतना ठेला, चौड़ा मोड़, नोएडा • बुक कार्नर, श्रीराम सेंटर, मण्डी हाउस, नई दिल्ली • बुक्स ऐण्ड न्यूज मार्ट, एम.आई. रोड, जयपुर • सुखविन्दर, मकान नं. 14, लेबर कालोनी, गिल रोड, लुधियाना

नन्ही पेन्सिल ने बनाया
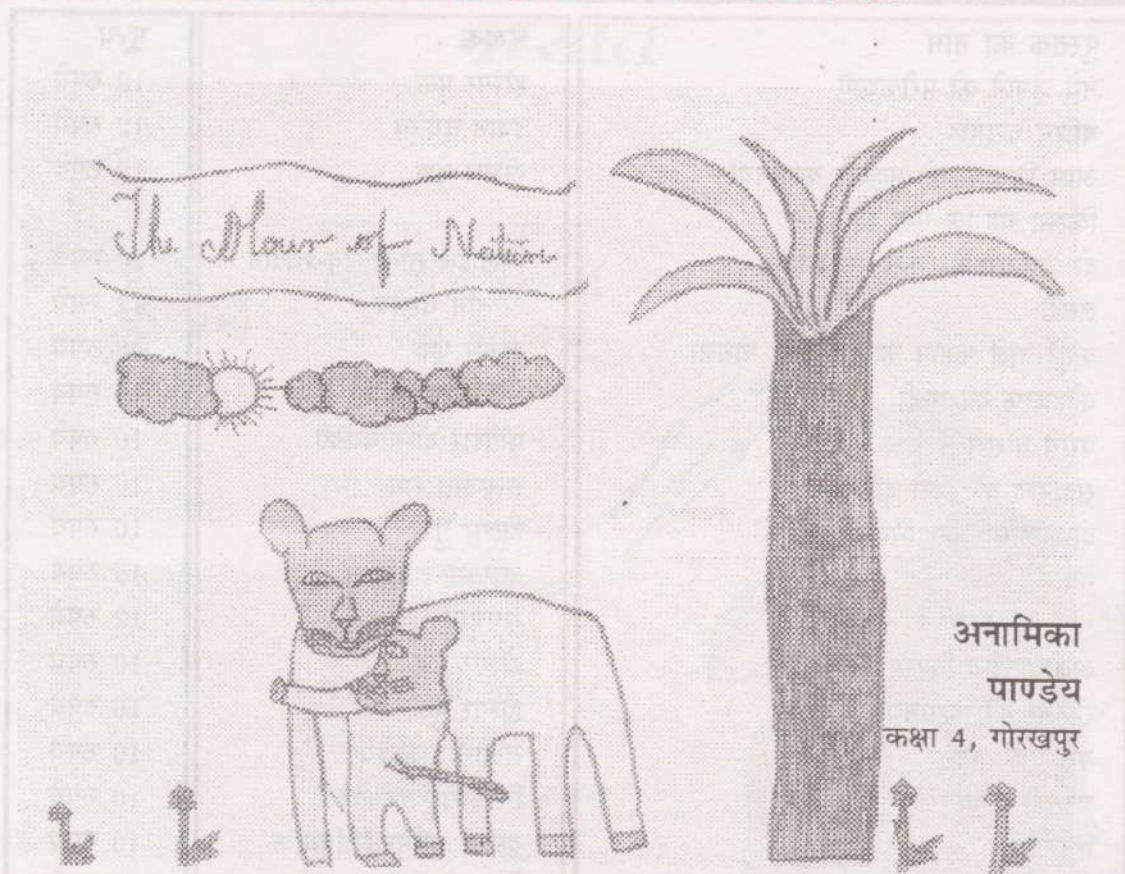
अनामिका पाण्डेय
कक्षा 4, गोरखपुर
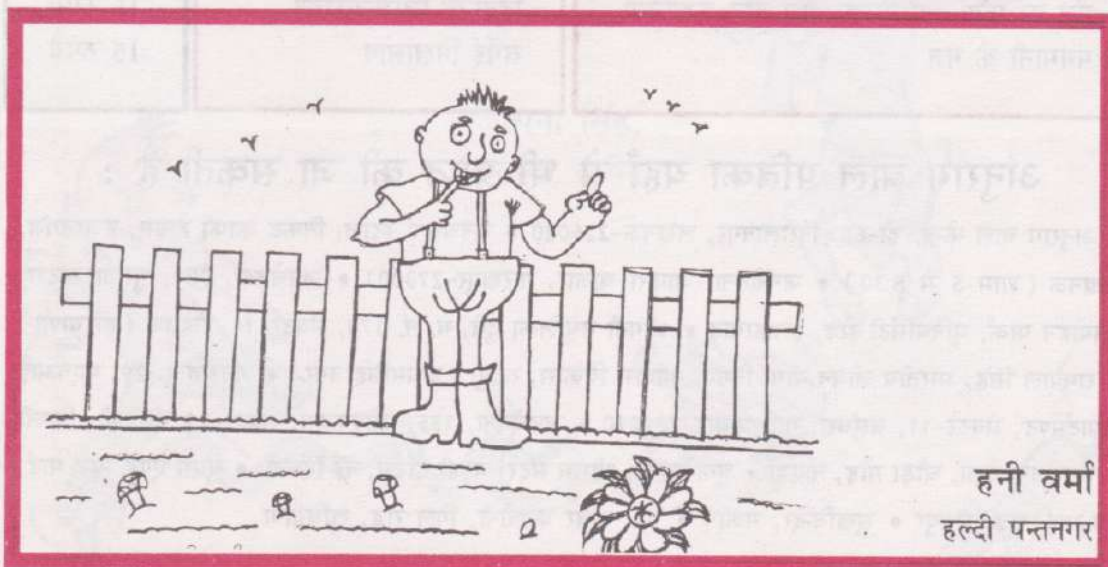
हनी वर्मा
हल्दी पन्तनगर

नन्ही पेन्सिल ने बनाया

वरुण प्रकाश
कक्षा 4, जोकहरा, उ.प्र.

प्रतिभा
कक्षा 4, रुद्रपुर

अन्नू पाण्डेय
उम्र-4 वर्ष, हल्द्वानी

टीटू देखो मैं एक कुत्ता खरीद लाया हूं
इसे जो कहो वह उठा लाता है
देखना
पिल्लू जाओ किताब उठा लाओ
देखा
जाओ फोन उठा लाओ
टिंग-टिंग
टिंग
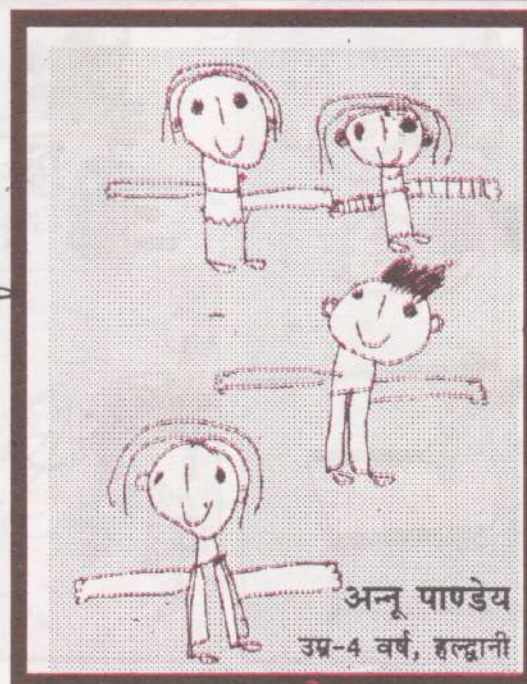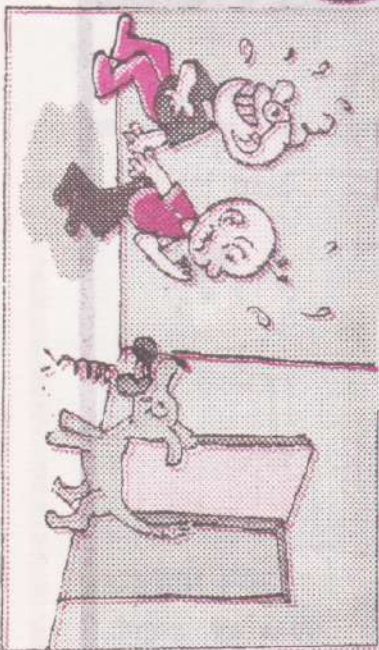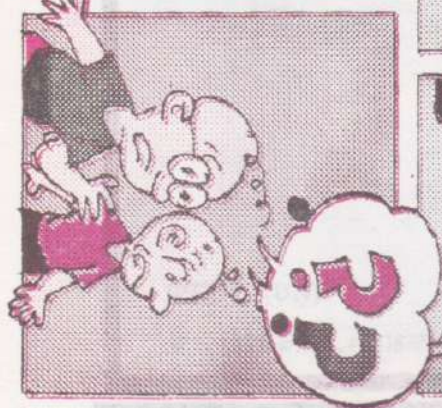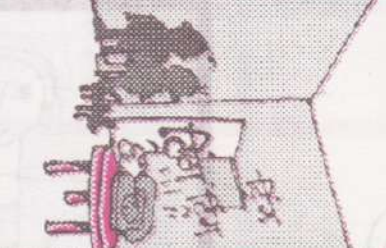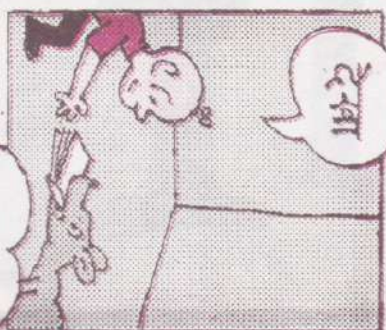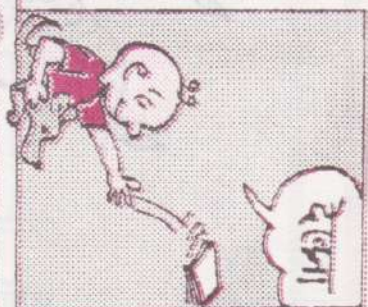
कार्टून कैसे बनाएं

1

2

3

4

5

नसीरुद्दीन शाह

चित्र कैसे बनाएँ

बालकूची

Anurag Bal Patrika OCTOBER, 2004-MARCH, 2005 RNI No. 65584/99